੧ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

गुर गिआन अंजन सचु नेत्री पाइआ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

गुरमति ज्ञान

(धर्म प्रचार कमेटी का मासिक पत्र)

भादों-आश्विन, संवत् नानकशाही ५४१

सितंबर 2009 वर्ष ३ अंक ९

संपादक — सिमरजीत सिंह, *एम. ए, एम. एम. सी.*

सहायक संपादक — सुरिंदर सिंह निमाणा, *एम. ए (हिंदी, पंजाबी), बी. एड.*

चंदा

सालाना (देश)	९० रुपये
आजीवन (देश)	९०० रुपये
सालाना (विदेश)	२५० रुपये
प्रति कापी	३ रुपये

चंदा भेजने का पता

सचिव

धर्म प्रचार कमेटी

(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)

श्री अमृतसर-९४३००६

फोन : 0183-2553956-57-58-59

एक्सटेंशन नंबर

वितरण विभाग **303**

संपादन विभाग **304**

फैक्स : 0183-2553919

e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com

website : www.sgpc.net

*पत्रिका प्राप्त न होने पर तथा चंदे आदि सम्बंधी जानकारी प्राप्त करने के लिए मोबाइल नं. **98886-38618** पर भी सम्पर्क किया जा सकता है।*

विषय-सूची

गुरबाणी विचार

असुनि प्रेम उमाहड़ा किउ मिलीऐ हरि जाइ ॥
मनि तनि पिआस दरसन घणी कोई आणि मिलावै माइ ॥
संत सहाई प्रेम के हउ तिन कै लागा पाइ ॥
विणु प्रभ किउ सुखु पाईऐ दूजी नाही जाइ ॥
जिंन्ही चाखिआ प्रेम रसु से त्रिपति रहे आघाइ ॥
आपु तिआगि बिनती करहि लेहु प्रभू लड़ि लाइ ॥
जो हरि कंति मिलाईआ सि विछुड़ि कतहि न जाइ ॥
प्रभ विणु दूजा को नही नानक हरि सरणाइ ॥
असू सुखी वसंदीआ जिना मइआ हरि राइ ॥८॥ *(पन्ना १३४-३५)*

पंचम सतिगुरु श्री गुरु अरजन देव जी बारह माहा मांझ की इस पावन पउड़ी में आश्विन मास की ऋतु और इसके प्राकृतिक तथा सांस्कृतिक वातावरण के प्रसंग में जीव-स्त्री को प्रभु-नाम के साथ जुड़कर मानव जीवन का अमूल्य अवसर सफल करने का गुरमति गाडी राह दर्शाते हैं।

गुरु जी जीव-स्त्री रूपी युवती को आध्यात्मिक दिशा देने हेतु उसका प्रतिनिधित्व करते हुए कथन करते हैं कि आश्विन मास में अथवा भादों की हुंमस के बाद आई इस सुहावनी मीठी ऋतु में मेरे अंदर पति-परमात्मा के लिए प्यार का उछाल आ रहा है। मेरे मन में यह ख्याल आता है कि जैसे भी हो किसी न किसी तरह ऐसे सुहावने मौसम में मैं प्रभु-पति से जाकर मिलूं। हे मेरी मां! मेरे मन एवं शरीर में अथवा मेरे समस्त अस्तित्व में पति-परमात्मा के दीदार की प्यासा गहरी हो गई है। संत-जन जो प्रभु-प्यार बढ़ाने में मददगार होते हैं, मैं उनके चरणों से लगी हूं, इसलिए कि मुझे अनुभव हो गया है कि प्रभु-पति के बगैर जीव-स्त्री सच्चा सुख अथवा आत्मिक आनंद प्राप्त नहीं कर सकती।

सतिगुरु जी कथन करते हैं कि जिन जीवों ने प्रभु-प्यार का रस चख लिया है वे सदैव संतुष्ट-भाव में रहते हैं भाव उनको सांसारिक इच्छाएं दुखित नहीं करतीं। वे 'स्वयं-भाव' का परित्याग कर देते हैं और सदैव यही विनती करते रहते हैं कि हे प्रभु! हमको अपने दामन से लगा लेना अथवा नाम से जोड़े रखना। जिस जीव-स्त्री को पति-परमात्मा का मिलाप प्राप्त हो गया है वह उससे बिछुड़ कर अन्य कहीं नहीं जाती, क्योंकि उसको भली-भांति ज्ञान अनुभव हो जाता है कि परमात्मा के बगैर कोई भी अन्य ठिकाना नहीं है। आश्विन मास की मीठी-मीठी ऋतु में वो जीव-स्त्रियां आत्मिक सुख में बसती हैं जिन पर परमात्मा रूपी राजा पति की कृपा होती है।

शबद-गुरु के सिद्धांत को जानने एवं मानने की आवश्यकता

धार्मिक तथा आध्यात्मिक क्षेत्र में मध्य युग में अज्ञानियों और स्वार्थवादियों ने बहुत बड़ा रोल-घचोला पैदा कर दिया हुआ था जब इस असहनीय स्थिति को बदलने हेतु गुरु नानक पातशाह की निर्मल अगुआई में गुरमति विचारधारा तथा सिक्खी जीवन-युक्ति का उदय हुआ। लगभग सभी मतों-मतांतरों के धारक धर्म तथा आध्यात्मिकता का अत्यंत अल्प-मात्र ज्ञान होने पर अपने डेरे जमाये तथा गद्दियां बनाये बैठे थे। इनमें कुछ के पास भोली-भाली जनता आती थी तो कुछ ने जनसाधारण से अपना संबंध-संपर्क ही तोड़ दिया हुआ था। इन दोनों प्रकार के तथाकथित गुरुओं से जनसाधारण का वास्तविक आध्यात्मिक कल्याण नहीं हो रहा था अथवा हो ही नहीं सकता था। ये उल्टा अपनी तथाकथित शक्तियों का भय अथवा आतंक अपने साधनों अथवा चेलों-चाटड़ों द्वारा फैलाकर बहुपक्षीय शोषण कर रहे थे। इस बहुत बड़े स्तर पर जनसाधारण के हो रहे शोषण को रोकने लिए सिक्ख मत के संस्थापक श्री गुरु नानक देव जी महाराज ने जहां ऐसे गुरु बन बैठे कुमार्गियों को गुरमति ज्ञान चर्चा के साथ झकझोरा वहां जनसाधारण को शबद-गुरु का गुरमति सिद्धांत उनके आत्मिक कल्याण हेतु बख्शिश किया। यह ज्ञात अथवा स्पष्ट हो कि गुरु नानक साहिब सहित दस गुरु साहिबान ने भूली-भटकी लोकाई को शबद-गुरु का सत्य ही समझाया। वे अपनी पूजा मान्यता कराने की रंचक मात्र इच्छा नहीं रखते थे। उन्होंने शबद-गुरु को जानने व मानने की आवश्यकता पर बल दिया और जनसाधारण का इस दिशा में आदर्श मार्गदर्शन भी किया। गुरु नानक साहिब का पावन निर्मल वचन है कि शबद ही गुरु अथवा पीर है, शबद गहर एवं गंभीर है, शबद के बिना संसार शैदाई हुआ भ्रमता है। *(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ६३५)* सिद्धों, नाथों और योगियों के साथ गुरु नानक पातशाह को विशेष संवाद रचाना पड़ा चूंकि वे आध्यात्मिक ज्ञान को जगत-कल्याण हेतु बिलकुल ही उपयोग में नहीं ला रहे थे। इस प्रसंग में गुरु जी ने 'सिध गोसटि' नामक पावन बाणी रामकली राग में उच्चारण की।

श्री गुरु नानक देव जी ने शबद-गुरु के प्रकाश से ही जनसाधारण को अज्ञानता के अंधकार में से निकाला और सच्ची, रूहानी और नैतिक जीवन-युक्ति प्रदान की। शबद-ज्ञान रूपी बाण के साथ आपने हर प्रकार के कर्मकांड को समाप्त करके लोगों को धर्म के वास्तविक आदर्श रूप के दर्शन कराये। गुरु जी ने भाई मरदाना जी की रबाब की तार पर अज्ञानता तथा कर्मकांड की अति कठोर पकड़-जकड़ को तुड़ाया। शबद-गुरु के रूबरू गुरु जी ने सज्जण ठग और कौडे जैसे आदमखोरों को भी सही रास्ते पर लाने में सफलता प्राप्त की। भाई लहणा जी ने सच्ची गुरु-सेवा कमाते हुए गुरु जी से शबद-गुरु की युक्ति पाकर लोक-कल्याण का सिलसिला उनके शारीरिक चोला बदल जाने पर चलता रखा। सेवा और सुमिरन में लीन होकर श्री गुरु अमरदास जी ने जब शबद-गुरु की मंजिल को छू लिया तो वे जनसाधारण को इसके उजाले से निहाल करने लगे। शबद-गुरु के प्रचार-प्रसार का यह सिलसिला दस गुरु साहिबान के गुरु-काल में चलता

रहा। जब दशमेश पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने भली-भांति देख-परख लिया कि अब सिक्ख संगत शबद-गुरु के सिद्धांत को इसके पूर्ण शुद्ध रूप में जानने-मानने के योग्य तथा सक्षम हो गई है तो उन्होंने ज्योति जोत समाने से पूर्व 'आदि ग्रंथ' साहिब के पुनर्संपादित रूप 'दमदमी बीड़' को बाकायदा गुरगद्दी प्रदान करके, परिक्रमा करके माथा टेक कर स्पष्ट रूप में यह घोषित किया कि सिक्ख संगत ने अब से श्री ग्रंथ साहिब जी को प्रत्यक्ष गुरु मानना है। इस प्रकार सतिगुरु नानक देव जी महाराज द्वारा दिये शबद-गुरु के सिद्धांत को दशम गुरु जी ने पूर्ण विकास-विगास की सर्वोच्च शिखर पर पहुंचाया। दशम गुरु जी ने सिक्ख पंथ को भी खालसा पंथ के सर्वोच्च शिखर तक पहुंचाया। खालसा पंथ के शबद-गुरु में अडोल-अडिग निश्चय को परखने हेतु चोजी प्रीतम ने एक बार तीर से संत दादू की मजार को नमन किया तो जागृत खालसा जी ने इसका भी नोटिस लिया और गुरु जी को इसके बदले तनखाह लगाई जो पातशाह ने शीश झुका स्वीकार की। गुरु पातशाह प्रसन्न हुए कि उनका सजाया खालसा पंथ शबद-गुरु के सिद्धांत को पूर्णत: समझने, जानने, मानने में सक्षम हुआ है, अब यह कदापि डोले, डगमगायेगा नहीं। यह कब्रों, मड़ियों, मूर्तियों आदि की झूठी पूजा से ऊपर उठकर अकाल पुरख परमात्मा के नाम के साथ जुड़ जायेगा।

शबद-गुरु रूप श्री आदि ग्रंथ साहिब को जिस भावना, जिस शुद्ध रूपाकार में पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी ने श्री रामसर साहिब श्री अमृतसर की धरत सुहावी पर तैयार किया और सचखंड श्री हरिमंदर साहिब में स्थापित किया, उससे हम सभी गुरु नानक नाम लेवा सिक्खों को यह स्पष्ट अगुआई प्राप्त होती है कि हमने केवल शबद-गुरु को ही जानना तथा मानना है।

सिक्ख पंथ/खालसा पंथ शबद-गुरु के सिद्धांत पर उत्तर गुरु काल में भी प्राय: जागृत रहा है और इसके हरेक मुश्किल से मुश्किल स्थिति में से पहले से भी अधिक जलाल के साथ सफल होकर उभरने के पीछे मुख्य तौर पर शबद-गुरु के सिद्धांत की स्पष्टता और उस पर पूर्णत: अमल व व्यवहार ही क्रियाशील रहे हैं। १९वीं सदी के दूसरे आधे भाग में जब इस प्रसंग में ढील देखी गई तो सिंघ सभा लहर का उदगम हुआ और ज्ञानी दित्त सिंघ तथा भाई गुरमुख सिंघ जैसे विद्वान सिक्खों ने इसको पुन: गुरु-बख्शे शबद-गुरु के सिद्धांत के साथ जोड़ा अथवा मूर्ति-पूजा और देहधारी, नकली गुरुओं के चंगुल से मुक्त कराया।

बीते दो-तीन दशकों से फिर शबद-गुरु के प्रति हमारी चेतनता में कुछ ढील देखी जा रही है। हम बड़ी ही टेढ़ी परिस्थितियों में से गुजर रहे हैं। इस कड़वे सत्य को स्वीकारना पड़ेगा कि आज हम शबद-गुरु के गुरमति सिद्धांत को भूलकर व्यक्तिगत या शख्सी पूजा के गलत मार्ग पर चल पड़े हैं। हम शबद-गुरु श्री गुरु ग्रंथ साहिब को मात्र बाहरी रस्मी सत्कार देकर ही यह समझने लगे हैं कि हम पर गुरु और परमात्मा की बख्शिश है अथवा हम उनकी बख्शिश के पात्र हैं, जबकि गुरु और परमात्मा की सच्ची कृपा हमारे शबद-गुरु को जानने तथा मानने में ही विद्यमान है। हमें अपने इर्द-गिर्द फैले गुरु-डंम के व्यापक जाल से सुचेत होकर स्वयं बचना होगा और साथ ही जनसाधारण को भी श्री गुरु ग्रंथ साहिब की पावन बाणी के उदाहरण देकर कुमार्ग से हटा कर गुरमति महामार्ग पर लाना होगा।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब : भाषायी एकता द्वारा मानवीय समता की स्थापना

*-डॉ. राजेंद्र सिंघ**

भाषा की दृष्टि से श्री गुरु ग्रंथ साहिब एक अद्वितीय, अद्भुत और अभूतपूर्व रचना है। सन् १६०४ ई में पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी द्वारा संपादित एवं फिर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के काल में भाई मनी सिंघ जी द्वारा पुनर्सम्पादित इस विलक्षण कृति में ६ गुरु साहिबान, १५ भक्तों, ११ भट्टों एवं कुछ निकटवर्ती सिखों की बाणियां शामिल हैं। इन महापुरुषों में सबसे पूर्ववर्ती हैं—बाबा फरीद जी (११७३-१२६६ ई) और सबसे बाद के हैं—नवम् पातशाह श्री गुरु तेग बहादर जी (१६२१-१६७५ ई)। इस प्रकार श्री गुरु ग्रंथ साहिब १२वीं शताब्दी से लेकर १७वीं शताब्दी तक के कुछ अति महत्वपूर्ण आध्यात्मिक चिंतकों की बाणियों का संकलन है।

यही विराट् फलक श्री गुरु ग्रंथ साहिब को भाषा की दृष्टि से भी एक विलक्षण कृति बनाता है। वास्तव में यहां १२वीं से १७वीं शताब्दी तक के ६०० वर्षों के दीर्घ कालखंड में व्याप्त विभिन्न भाषाई रूपों के दर्शन हो जाते हैं। यही नहीं पूर्ववर्ती संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश आदि प्राचीन भाषाओं का प्रभाव भी इसकी भाषा में साफ झलकता है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में संकलित महापुरुष एक ओर तो भारत के अलग-अलग प्रदेशों से संबंध रखते थे, वहीं साथ ही संत होने के नाते इनकी प्रवृत्ति भी सदैव भ्रमण करते रहने की थी, जिससे ये भिन्न प्रदेशों के शब्द भी ग्रहण करते ही रहते थे। फलस्वरूप श्री गुरु ग्रंथ साहिब में भारत की विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं के विविध नमूने तो मिलते ही हैं बल्कि इन भाषा-रूपों पर अन्य प्रादेशिक भाषाओं के गहरे प्रभावों को भी स्पष्टतया देखा जा सकता है। इसके अतिरिक्त मध्य काल में अरबी-फारसी-तुर्की जैसी मध्य एशियाई भाषाओं के सम्पर्क में आने पर भारतीय भाषाओं पर जो इनका असर पड़ा, उसे भी श्री गुरु ग्रंथ साहिब की भाषा में आसानी से रेखांकित किया जा सकता है। यही कारण है कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब को प्राचीन एवं मध्यकालीन भारतीय भाषाओं का कोश भी कहा जाता है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब का भाषाई स्वरूप

श्री गुरु ग्रंथ साहिब के भाषाई रूपों को वर्गों में रखने का प्रयास स्थूल भी है और अनुपयुक्त भी क्योंकि एक ओर तो यहां अनगिनत भाषा-रूप मौजूद हैं और दूसरे इन भाषा रूपों पर पूर्ववर्ती और समकालीन भाषाओं का ऐसा मिला-जुला प्रभाव है कि किसी एक भाषा-रूप को किसी एक भाषा के दायरे में बांधना अत्यंत कठिन है। अक्सर एक ही बाणीकार ने कई-कई भाषाओं का प्रयोग किया है और इससे भी आगे उन भाषा-रूपों में अन्य कई भाषाओं के शब्द घुले-मिले हैं। इस संदर्भ में प्रिंसीपल सतबीर सिंघ लिखते हैं-

"ईसाई खुदा की बोली लातीनी, मुसलमान अरबी और हिंदू देववाणी संस्कृत को समझते हैं। गुरु ग्रंथ साहिब ने समझाया कि अल्लाह, परमात्मा, वाहिगुरु की कोई खास बोली नहीं, उसकी बोली सिर्फ प्यार है। इसीलिए गुरु ग्रंथ साहिब में हर प्रांत, हर देश, हर क्षेत्र और हर

**१/३३८ 'स्वप्नलोक', दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा (लुधियाना)।*

धर्म के शब्दों का प्रयोग किया गया है।"

(श्री गुरु ग्रंथ महिमा कोश, पृष्ठ १६९)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में प्रयुक्त भाषाई रूप

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में प्रयुक्त भाषा-रूपों का अध्ययन करने के लिए एक-एक बाणीकार पर अलग-अलग विचार करना जरूरी है। सबसे पहले ६ गुरु साहिबान की भाषा का विश्लेषण करते हैं :

श्री गुरु नानक देव जी

प्रथम पातशाह श्री गुरु नानक देव जी ने सामान्यत: 'पंजाबी' को अपनी बाणी का माध्यम बनाया है। आपकी पंजाबी तकनीकी तौर पर 'पूर्वी पंजाबी' है जो उस समय की आम बोल-चाल की भाषा थी :

सभ महि जोति जोति है सोइ ॥
तिस कै चानणि सभ महि चानणु होइ ॥

(पन्ना ६६३)

गुरु जी की बाणी में सधुक्कड़ी भाषा का भी बहुत प्रयोग हुआ है। मध्य काल में सधुक्कड़ी भाषा या संत भाषा पूरे उत्तर भारत में बोली एवं समझी जाती थी। इस भाषा का प्रयोग मुख्य रूप से देश-देशांतर में भ्रमण करने वाले साधू-संत किया करते थे। इसके अलावा यह व्यापारियों और यात्रियों की भी माध्यम-भाषा थी। फर्क सिर्फ यह था कि जहां साधू-संतों की भाषा में धार्मिक-आध्यात्मिक शब्दावली की अधिकता थी, वहीं व्यापारियों-यात्रियों की भाषा में सामान्य जन-जीवन की शब्दावली प्रयोग की जाती थी। विद्वानों का मानना है कि गुरु जी ने पंजाब से बाहर बस रहे लोगों से संवाद कायम करने के लिए सधुक्कड़ी भाषा का प्रयोग किया :

सुंन कला अपरंपरि धारी ॥
आपि निरालमु अपर अपारी ॥ (पन्ना १०३७)

गुरु जी द्वारा रचित 'सिध गोसटि' भी सधुक्कड़ी भाषा में है।

श्री गुरु नानक देव जी द्वारा प्रयोग की गई एक और भाषा है—सहसक्रिती। 'सहसक्रिती' 'संस्कृत' शब्द का अपभ्रंश रूप है। 'सहसक्रिती' शब्द उस भाषा के लिए प्रयोग किया जाता था जो संस्कृत की परम्परा में पालि और प्राकृत के संयोग से बनी थी और जिसे सिद्ध एवं नाथ प्रयोग किया करते थे। वास्तव में यह उस काल की आध्यात्मिक विमर्श की भाषा थी। इस भाषा में गुरु जी का एक 'श्लोक' 'आसा की वार' में दर्ज है। कदाचित् संस्कृत को ब्राह्मणों द्वारा धर्म-भाषा का दर्जा दिये जाने के विरोध में गुरु जी ने 'सहसक्रिती' का प्रयोग किया है। वैसे भी इस 'श्लोक' में ब्राह्मणों के पाखंड का खंडन किया गया है :

पढ़ि पुस्तक संधिआ बादं ॥
सिल पूजसि बगुल समाधं ॥
मुखि झूठु बिभूखन सारं ॥
त्रैपाल तिहाल बिचारं ॥
गलि माला तिलक लिलाटं ॥
दुइ धोती बसत्र कपाटं ॥
जो जानसि ब्रहमं करमं ॥
सभ फोकट निसचै करमं ॥ (पन्ना १३५३)

मध्य काल में मुस्लिम राज्य-तंत्र के कारण भारत में अरबी-फारसी भाषाओं का काफी प्रचलन था। गुरु साहिब लम्बे समय तक मुस्लिमों के सम्पर्क में रहे थे, इसलिए आपकी भाषा में अरबी-फारसी का अच्छा-खासा प्रभाव था :

पंजि निवाजा वखत पंजि पंजा पंजे नाउ ॥
पहिला सचु हलाल दुइ तीजा खैर खुदाइ ॥
चउथी नीअति रासि मनु पंजवी सिफति सनाइ ॥

(पन्ना १४१)

यही नहीं 'राग तिलंग' में गुरु जी का शबद तो पूरे का पूरा फारसी में है, जिससे सिद्ध होता है कि गुरु जी फारसी के अच्छे विद्वान थे:

यक अरज गुफतम पेसि तो गद गोस कुन करतार ॥
हका कबीर करीम तू बेऐब परवदगार ॥

(पन्ना ७२१)

गुरु जी के समय में पंजाबी पर पश्चिमी पंजाब में प्रचलित 'लहिंदी' भाषा का भी बड़ा प्रभाव था। गुरु जी की बाणी में 'लहिंदी' का प्रचुर प्रयोग है :

जा पका ता कटिआ रही सु पलरि वाड़ि ॥
सणु कीसारा चिथिआ कणु लइआ तनु झाड़ि ॥
(पन्ना १४२)

श्री गुरु अंगद देव जी

श्री गुरु अंगद देव जी के ६३ श्लोक श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज हैं जो सामान्य बोलचाल की पंजाबी में रचे गये हैं। यह पंजाबी आधुनिक पंजाबी के अत्यंत निकट है :

नानक दुनीआ कीआं वडिआईआं अगी सेती जालि ॥
एनी जलीईं नामु विसारिआ इक न चलीआ नालि ॥ (पन्ना १२९०)

गुरु जी की बाणी पर कहीं सधुक्कड़ी भाषा का प्रभाव भी है :

नानक चिंता मति करहु चिंता तिस ही हेइ ॥
जल महि जंत उपाइअनु तिना भि रोजी देइ ॥
(पन्ना ९५५)

दूसरे पातशाह की भाषा में लहिंदी एवं अरबी-फारसी के शब्द भी मिलते हैं परन्तु ये अल्प मात्रा में हैं :

नानक हुकमु पछाणि कै तउ खसमै मिलणा ॥
(पन्ना १३९)

गुरु जी ने 'सहसक्रिती' में भी तीन श्लोक रचे हैं। वार माझ की २३वीं पउड़ी का एक श्लोक एवं आसा की वार की १२वीं पउड़ी के बाद के दो श्लोक। एक उदाहरण :

जोग सबदं गिआन सबदं बेद सबदं त ब्राहमणह ॥
ख्यत्री सबदं सूर सबदं सूद्र सबदं परा क्रितह ॥
(पन्ना १३५३)

श्री गुरु अमरदास जी

तीसरे पातशाह साहिब श्री गुरु अमरदास जी के ८९१ शबद-श्लोक श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज हैं। गुरु जी की बाणी की मुख्य भाषा तो पंजाबी ही है परन्तु उसमें संस्कृत, अपभ्रंश, सधुक्कड़ी, अरबी-फारसी आदि के शब्द घुले-मिले हैं। इनमें से सधुक्कड़ी का प्रयोग अधिक और शेष का अपेक्षाकृत कम है :

जैसी धरती ऊपरि मेघुला बरसतु है किआ धरती मधे पाणी नाही ॥
जैसे धरती मधे पाणी परगासिआ बिनु पमा पगा वरसत फिराही ॥ (पन्ना १६२)

कदाचित् ७२ वर्ष की आयु तक वैष्णव मत के अनुयायी रहने के कारण श्री गुरु अमरदास जी की भाषा पर संस्कृत, अपभ्रंश एवं सधुक्कड़ी का प्रभाव अधिक है परन्तु वारों एवं श्लोकों में पंजाबी उभर आई है और सधुक्कड़ी दब गई है :

सतीआ एहि न आखीअनि जो मड़िआ लगि जलंन्हि ॥
नानक सतीआ जाणीअन्हि जि बिरहे चोट मरंन्हि ॥ (पन्ना ७८७)

श्री गुरु रामदास जी

पंजाब के माझा क्षेत्र के निवासी होने के कारण चौथी पातशाही की भाषा ऐसी पंजाबी है जिसमें सधुक्कड़ी एवं अरबी-फारसी की शब्दावली बहुत ही कम है :

तूं आदि पुरखु अपरंपरु करता जी तुधु जेवडु अवरु न कोई ॥
तूं जुगु जुगु एको सदा सदा तूं एको जी तूं निहचलु करता सोई ॥ (पन्ना ११)

गुरु जी ने कई बार 'लहिंदी' भाषा का भी सुंदर प्रयोग किया है :

तूं करता सचिआरु मैडा सांई ॥
जो तउ भावै सोई थीसी जो तूं देहि सोई हउ पाई ॥ (पन्ना ११)

श्री गुरु अरजन देव जी

श्री गुरु ग्रंथ साहिब की संपादना करने

वाले पंचम पातशाह बहुभाषी विद्वान हैं। सामान्यत: आपने पंजाबी भाषा का प्रयोग किया है :

संता के कारजि आपि खलोइआ हरि कंमु करावणि आइआ राम ॥ (पन्ना ७८३)

हालांकि पंचम पातशाह को श्री गुरु नानक देव जी की तुलना में मुसलमानों के सम्पर्क में रहने का कम अवसर मिला परन्तु फिर भी आपकी बाणी में अरबी-फारसी की अच्छी-खासी शब्दावली शामिल है :

रंग तुंग गरीब मसत सभु लोकु सिधासी ॥
काजी सेख मसाइका सभे उठि जासी ॥
(पन्ना ११००)

यही नहीं, गुरु जी ने लहिंदी, ब्रज और सहिसक्रिती भाषा का भी कुशल प्रयोग किया है:

लहिंदी :

जे तू मित्रु असाडड़ा हिक भोरी ना वेछोड़ि ॥ जीउ महिंजा तउ मोहिआ कदि पसी जानी तोहि ॥ (पन्ना १०९४)

ब्रज :

अंम्रिता प्रिअ बचन तुहारे ॥
अति सुंदर मनमोहन पिआरे सभहू मधि निरारे ॥ (पन्ना ५३४)

सहिसक्रिती :

सुभ बचन रमणं गवणं साध संगेण उधरणह ॥
संसार सागरं नानक पुनरपि जनम न लभ्यते ॥
(पन्ना १३६१)

श्री गुरु तेग बहादर जी

नवम पातशाह के ५९ शबद एवं ५७ श्लोक श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज हैं। इनकी भाषा बोलचाल की भाषा ब्रज है, जिसमें तद्भव शब्द काफी हैं :

हरि की गति नहि कोऊ जानै ॥
जोगी जती तपी पचि हारे अरु बहु लोग सिआने ॥१॥रहाउ॥
छिन महि राउ रंक कउ करई राउ रंक करि डारे ॥
रीते भरे भरे सखनावै यह ता को बिवहारे ॥
(पन्ना ५३७)

छह गुरु साहिबान की बाणी के साथ-साथ श्री गुरु ग्रंथ साहिब में १५ भक्त साहिबान की बाणी भी दर्ज है। ये भक्त हैं—भक्त कबीर जी, भक्त रविदास जी, भक्त नामदेव जी, शेख फरीद जी, भक्त जैदेव जी, भक्त सधना जी, भक्त त्रिलोचन जी, भक्त रामानंद जी, भक्त सैण जी, भक्त पीपा जी, भक्त धंना जी, भक्त सूरदास जी, भक्त परमानंद जी, भक्त भीखण जी और भक्त बेणी जी। भारत के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों से संबंधित होने के कारण इन भक्त साहिबान ने भिन्न-भिन्न क्षेत्रीय भाषाओं का प्रयोग किया है। इनकी उपस्थिति श्री गुरु ग्रंथ साहिब को एक बहुभाषी ग्रंथ बनाने में एक बड़ी भूमिका अदा करती है।

भक्त कबीर जी

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में भक्त कबीर जी के ५३७ शबद शामिल हैं। इनमें भक्त कबीर जी ने मूलत: सधुक्कड़ी भाषा का प्रयोग किया है :

हरि जसु सुनहि न हरि गुन गावहि ॥
बातन ही असमानु गिरावहि ॥
ऐसे लोगन सिउ किआ कहीऐ ॥
जो प्रभ कीए भगति ते बाहज तिन ते सदा डराने रहीऐ ॥ (पन्ना ३३२)

भक्त कबीर जी की भाषा में कई जगह अरबी-फारसी भी प्रधान हो गई है :

बेद कतेब इफतरा भाई दिल का फिकरु न जाइ ॥ (पन्ना ७२७)

भक्त रविदास जी

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज भक्त रविदास जी के ४० शबदों-श्लोकों की भाषा सधुक्कड़ी है जिसमें ब्रज, अवधी, राजस्थानी, पंजाबी, अरबी-फारसी आदि के शब्द घुले-मिले हैं :

बेगम पुरा सहर को नाउ ॥
दूखु अंदोहु नही तिहि ठाउ ॥

नां तसवीस खिराजु न मालु ॥
खउफु न खता न तरसु जवालु ॥ (पन्ना ३४५)

भक्त नामदेव जी

भक्त नामदेव जी के श्री गुरु ग्रंथ साहिब में सम्मिलित ६ शबदों-श्लोकों में तीन भाषा रूप मिलते हैं :

पहला, सधुक्कड़ी :
कबहू तुरे तुरंग नचावै ॥
कबहू पाइ पनहीओ न पावै ॥ (पन्ना ११६४)

दूसरा, भक्त नामदेव जी की मातृ-भाषा मराठी वाला :
साधिक सिध सगल मुनि चाहहि बिरले काहू डीठुला ॥
सगल भवण तेरो नामु बालहा तिउ नामे मनि बीठुला ॥ (पन्ना ६९३)

तीसरा, पंजाब-प्रवास के कारण पंजाबी-प्रधान :
जौ राजु देहि त कवन बडाई ॥
जौ भीख मंगावहि त किआ घटि जाई ॥
(पन्ना ५२५)

१४वीं शताब्दी के होने के बावजूद भक्त नामदेव जी की भाषा में अरबी-फारसी का भी गहरा प्रभाव दिखता है :
हले यारां हले यारां खुसिखबरी ॥
बलि बलि जांउ हउ बलि बलि जांउ ॥
(पन्ना ७२७)

शेख फरीद जी

शेख फरीद जी के कुल ११६ शबद-श्लोक श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज हैं। आप बोल-चाल की सहज पंजाबी का प्रयोग करते हैं, जिसमें सिंधी और लहिंदी भी घुली-मिली है :
फरीदा बारि पराइऐ बैसणा सांई मुझै न देहि ॥
जे तू एवै रखसी जीउ सरीरहु लेहि ॥
(पन्ना १३८०)

कई स्थानों पर अरबी-फारसी का प्रभाव अधिक है :
फरीदा बे निवाजा कुतिआ एह न भली रीति ॥
कबही चलि न आइआ पंजे वखत मसीति ॥
(पन्ना १३८१)

दिल्ली-अजमेर आते-जाते रहने के कारण आपकी भाषा में कहीं-कहीं हिंदी की झलक भी आ गई है :
बेड़ा बंधि न सकिओ बंधन की वेला ॥
भरि सरवरु जब ऊछलै तब तरणु दुहेला ॥
(पन्ना ७९४)

भक्त जैदेव जी

१२वीं शताब्दी के बंगाल के भक्त जैदेव जी के दो शबद श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज हैं, जो संस्कृत भाषा में हैं :
परमादि पुरखमनोपिमं सति आदि भाव रतं ॥
परमदभुतं परक्रिती परं जदिचिंति सरब गतं ॥
(पन्ना ५२६)

भक्त सधना जी

१४वीं शताब्दी के भक्त सधना जी का श्री गुरु ग्रंथ साहिब में शामिल एक पद सधुक्कड़ी भाषा में है :
मै नाही कछु हउ नही किछु आहि न मोरा ॥
अउसर लजा राखि लेहु सधना जनु तोरा ॥
(पन्ना ८५८)

भक्त त्रिलोचन जी

भक्त नामदेव जी के समकालीन एवं साथी भक्त त्रिलोचन जी के श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज चारों पदों की भाषा आपकी मातृ-भाषा मराठी है :
पूरबलो क्रित करमु न मिटै री घर गेहणि ता चे मोहि जापीअले राम चे नामं ॥ (पन्ना ६९५)

भक्त रामानंद जी

आप भक्त कबीर जी के गुरु हुए हैं। संस्कृत के विद्वान भक्त रामानंद जी का श्री गुरु ग्रंथ साहिब में संकलित एक मात्र पद सधुक्कड़ी में है :
बेद पुरान सभ देखे जोइ ॥

ऊहां तउ जाईऐ जउ ईहां न होइ ॥
(पन्ना ११९५)

भक्त सैण जी

भक्त सैण जी का एक पद भी सधुक्कड़ी भाषा में है :

धूप दीप घ्रित साजि आरती ॥
वारने जाउ कमला पती ॥ (पन्ना ६९५)

भक्त पीपा जी

भक्त पीपा जी राजस्थान के थे। इसलिए श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज आपका एक मात्र पद राजस्थानी भाषा में है :

पीपा प्रणवै परम ततु है सतिगुरु होइ लखावै ॥
(पन्ना ६९५)

भक्त धंना जी

भक्त धंना जी राजस्थान के टांक क्षेत्र के थे। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में आपके ३ शबद हैं। आपकी सधुक्कड़ी भाषा पर भी राजस्थानी का गहरा असर है :

दालि सीधा मागउ घीउ ॥
हमरा खुसी करै नित जीउ ॥
पन्हीआ छादनु नीका ॥
अनाजु मगउ सत सी का ॥ (पन्ना ६९५)

भक्त सूरदास जी

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज आपकी एक मात्र पंक्ति ब्रज में है :

हरि के संग बसे हरि लोक ॥ (पन्ना १२५३)

भक्त परमानंद जी

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज भक्त परमानंद जी का एक पद भी ब्रज भाषा में है :

कामु न बिसरिओ क्रोधु न बिसरिओ लोभु न छूटिओ देवा ॥ (पन्ना १२५३)

भक्त भीखन जी

लखनऊ के सूफी फकीर भक्त भीखन जी के श्री गुरु ग्रंथ साहिब में शामिल दोनों पदों की भाषा हिंदवी है :

नैनहु नीरु बहै तनु खीना भए केस दुध वानी ॥
रूधा कंठु सबदु नही उचरै अब किआ करहि परानी ॥ (पन्ना ६५९)

भक्त बेणी जी

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में भक्त बेणी जी के तीन पद हैं जिनकी भाषा सधुक्कड़ी है :

जिनि आतम ततु न चीन्हिआ ॥
सभ फोकट धरम अबीनिआ ॥
कहु बेणी गुरमुखि धिआवै ॥
बिनु सतिगुर बाट न पावै ॥ (पन्ना १३५१)

सवैये भट्टों के

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में ११ भट्टों के १२३ सवैये दर्ज हैं। ये भट्ट परस्पर रक्त-संबंधी थे और पंचम पातशाह की शरण में रहते थे। इनके नाम थे—भट्ट कलसहार जी, भट्ट जालप जी, भट्ट कीरत जी, भट्ट भिखा जी, भट्ट सल जी, भट्ट नल जी, भट्ट भल जी, भट्ट गयंद जी, भट्ट मथरा जी, भट्ट बल जी और भट्ट हरिबंस जी। इन भट्टों ने प्रथम पांच गुरु साहिबान की स्तुति में सवैयों की रचना की है। भाषा की दृष्टि से ये सवैये ब्रज भाषा में रचे गये हैं। एक उदाहरण :

अब राखहु दास भाट की लाज ॥
जैसी राखी लाज भगत प्रहिलाद की हरनाखस फारे कर आज ॥
फुनि द्रोपती लाज रखी हरि प्रभु जी छीनत बसत्र दीन बहु साज ॥ (पन्ना १४००)

बाबा सुंदर जी

पंचम पातशाह के समय में हुए गुरसिख बाबा सुंदर जी द्वारा रचित एक 'सद' श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज है जो तत्कालीन बोल-चाल की पंजाबी का सुंदर उदाहरण है :

सतिगुरि भाणै आपणै बहि परवारु सदाइआ ॥
मत मै पिछै कोई रोवसी सो मै मूलि न भाइआ ॥ (पन्ना ९२३)

राय बलवंड जी और भाई सत्ता जी

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में राय बलवंड और

सत्ता की रची हुई एक वार संकलित है जिसमें प्रथम पांच गुरु साहिबान की स्तुति की गई है। इसकी भाषा पश्चिमी पंजाबी है जिस पर अरबी-फारसी का गहरा प्रभाव है :

नाउ करता कादरु करे किउ बोलु होवै जोखीवदै ॥
दे गुना सति भैण भराव है पारंगति दानु पड़ीवदै ॥
नानकि राजु चलाइआ सचु कोटु सताणी नीव दै ॥ *(पन्ना ९६६)*

भाई मरदाना जी

श्री गुरु नानक देव जी के बाल-सखा भाई मरदाना जी के नाम पर तीन श्लोक श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज हैं। ये श्लोक श्री गुरु नानक देव जी द्वारा भाई मरदाना जी के नाम पर रचे बताए जाते हैं जो तत्कालीन बोलचाल की पंजाबी में रचे गये हैं:

गिआनु गुड़ु सालाह मंडे भउ मासु आहारु ॥
नानक इहु भोजनु सचु है सचु नामु आधारु ॥
(पन्ना ५५३)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब के उपर्युक्त भाषागत विवेचन के आधार पर निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त किये जा सकते हैं :

१. पहला यह कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब की प्रमुख भाषा पंजाबी है, जिसमें प्रथम पांच गुरु साहिबान, बाबा सुंदर जी, शेख फरीद जी, राय बलवंड जी तथा भाई सत्ता जी की और भाई मरदाना जी के नाम रचित बाणी शामिल है। पंजाबी के दोनों रूपों—पूर्वी और पश्चिमी का प्रचुरता से प्रयोग हुआ है। साथ ही इस पंजाबी पर लहिंदी और सिंधी भाषा का भी गहरा प्रभाव दिखता है।

२. श्री गुरु ग्रंथ साहिब में प्रयोग की गई दूसरी प्रमुख भाषा सधुक्कड़ी है। ब्रज, अवधी, राजस्थानी, खड़ी बोली आदि जैसी कई उत्तर भारतीय बोलियों के मिश्रण से बनी इस भाषा में भक्त कबीर जी, भक्त रविदास जी, भक्त सधना जी, भक्त रामानंद जी, भक्त सैण जी, भक्त सूरदास जी, भक्त परमानंद जी, भक्त भीखण जी और भक्त बेणी जी ने बाणी रची है।

३. दोनों प्रमुख भाषा-रूपों—पंजाबी और सधुक्कड़ी पर अरबी-फारसी का काफी गहरा प्रभाव मौजूद है। श्री गुरु नानक देव जी और शेख फरीद जी ने तो कहीं-कहीं पूर्ण फारसी का उपयोग भी किया है।

४. श्री गुरु ग्रंथ साहिब में ब्रज भाषा का भी प्रचुर प्रयोग हुआ है। श्री गुरु तेग बहादर जी की समस्त बाणी ब्रज भाषा में है। श्री गुरु अरजन देव जी की भी काफी बाणी ब्रज भाषा में है। भट्टों ने भी ब्रज का ही प्रयोग किया है।

५. श्री गुरु ग्रंथ साहिब में सहसक्रिती भाषा का भी प्रयोग है, जिसमें श्री गुरु नानक देव जी, श्री गुरु अंगद देव जी एवं श्री गुरु अरजन देव जी की कुछ बाणी रचित है।

६. इसके अतिरिक्त भक्त नामदेव जी एवं भक्त त्रिलोचन जी ने मारठी, भक्त पीपा जी और भक्त धंना जी ने राजस्थानी तथा भक्त जैदेव जी ने संस्कृत भाषा में अपनी बाणी रची है।

इस प्रकार श्री गुरु ग्रंथ साहिब में उत्तर भारत के समस्त क्षेत्रों के लगभग सभी भाषा-रूपों का प्रयोग हुआ है। वास्तव में श्री गुरु ग्रंथ साहिब में भाषा को किसी धर्म, संप्रदाय या क्षेत्र तक सीमित नहीं किया गया बल्कि भाषिक एकता के माध्यम से भी मानवीय एकता की बात की गयी है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की विशेषताएं

*-बीबा वलविंदर कौर**

श्री गुरु ग्रंथ साहिब संसार का ऐसा पहला धर्म-ग्रंथ है जिसमें अनेक ऐसी विशेषताएं हैं जो संसार के किसी धर्म-ग्रंथ व धर्म-पुस्तकों में नहीं हैं। विश्व भर में केवल इस पावन ग्रंथ को ही 'गुरु' की पदवी प्राप्त है। इसमें अंकित बाणी पूर्ण रूप से प्रमाणित है। सारी बाणी में एकसुरता है। बाणी संगीतमयी है। बाणी को गुरु का दर्जा प्राप्त है। यह पावन ग्रंथ विचारमयी है, अन्तरमुखी और बाहरमुखी ज्ञान का संग्रहित रूप है। यह पावन ग्रंथ सारी मानवता को सर्वसांझा संदेश देता है। इसमें भाषा की एकसुरता है, यह मानवहितवादी है। यह पावन ग्रंथ अनेकता में एकता की अद्‌भुत मिसाल है।

प्रमाणित बाणी

गुरबाणी के संग्रहित रूप श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी को गुरु साहिब ने स्वयं संपादित किया। इसमें अंकित बाणी पूर्ण रूप से शुद्ध है। कहने का तात्पर्य यह है कि जैसी गुरु साहिबान, भक्त साहिबान, भट्‌ट साहिबान और गुरु-घर के श्रद्धावान गुरसिखों ने बाणी की रचना की थी उसी रूप में आज तक बिना फेरबदल के श्री गुरु ग्रंथ साहिब में अंकित है। सम्पूर्ण इतिहास में यह एक अद्‌भुत ग्रंथ है जिसकी संपादना का कार्य गुरु साहिबान ने स्वयं किया, इसलिए यह पावन ग्रंथ हरेक पहलू से संपूर्ण है। अन्य मतों के ग्रंथ उनके संस्थापक महापुरुषों के बहुत देर पश्चात किसी दूसरे लोगों द्वारा संपादित किए गए। श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की यह विशेषता है कि इस ग्रंथ को गुरु साहिबान ने स्वयं बाणी इकट्‌ठी करके, उसे नियमबद्ध क्रम देकर, स्वयं संपादित किया।

शबद-गुरु या बाणी-गुरु

गुरु साहिबान ने जिन आधारभूत सिद्धांतों पर धर्म की नींव रखी उनमें शबद-गुरु का सिद्धांत अद्‌भुत है, क्योंकि गुरु साहिबान ने अनुभव किया कि हिंदोस्तान के धर्मों में मूर्ति-पूजा एक रोग बन चुकी थी, जिसने धर्म की असल ज्योति को मध्यम कर रखा था।

--पवन अरंभु सतिगुर मति वेला ॥
सबदु गुरू सुरति धुनि चेला ॥ (पन्ना ९४३)
--इका बाणी इकु गुरु इको सबदु वीचारि ॥
(पन्ना ६४६)

शबद-गुरु का मुख्य उद्‌देश्य शारीरिक रूपी गुरु की प्रथा को विराम लगाना था और सदैव रहने वाले गुरु के साथ मानवता को जोड़ना था।

श्री गुरु अमरदास जी ने बाणी की उच्चता जोर देते उपदेश दिया है :

आवहु सिख सतिगुरू के पिआरिहो गावहु सची बाणी ॥
बाणी त गावहु गुरू केरी बाणीआ सिरि बाणी ॥
(पन्ना ९२०)

श्री गुरु रामदास जी ने बाणी को गुरु-रूप मानने का स्पष्ट आदेश दिया है :

बाणी गुरू गुरू है बाणी विचि बाणी अंम्रितु सारे ॥
गुरु बाणी कहै सेवकु जनु मानै परतखि गुरू निसतारे ॥ (पन्ना ९८२)

स्पष्ट है कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज सारी बाणी को गुरु-रूप माना गया है।

एकरूप बाणी

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में जो भी बाणी जिस

**खोज विद्यार्थी, दर्शनशास्त्र अध्ययन विभाग, पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला-१४७००२*

रूप में गुरु साहिबान, भक्त साहिबान, भट्ट साहिबान और गुरसिखों ने उच्चारण की थी उसी रूप में श्री गुरु ग्रंथ साहिब में शामिल कर ली गई है। आज तक उसमें किसी तरह के बदलाव की कोई आशंका नहीं है। श्री गुरु अंगद देव जी से लेकर श्री गुरु अरजन देव जी तक और नौवें गुरु साहिब द्वारा उच्चरि बाणी में अपने व्यक्तिगत नाम का प्रयोग नहीं किया है बल्कि सारी बाणी 'नानक' नाम की छाप के अधीन रची गई है। इस बात को जानने के लिए कि कौन-सी बाणी किस गुरु साहिब द्वारा रचित है, इसके लिए 'महला' शब्द का प्रयोग शबद के आरंभ में किया गया है। श्री गुरु नानक देव जी की बाणी के साथ महला १, श्री गुरु अंगद देव जी की बाणी के साथ महला २, श्री गुरु अमरदास जी की बाणी के साथ महला ३ और इसी प्रकार चौथे, पांचवें और नौवें गुरु जी की बाणी के साथ महला ४, ५ और ९ दर्ज करके बाणीकार विशेष की बाणी की पहचान का संकेत दिया गया है।

श्री गुरु अरजन देव जी ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब की सम्पादना करते समय भक्त साहिबान और भट्ट साहिबान के द्वारा रचित बाणी की पहचान के लिए बाणी के अंत में उनके नाम का सम्बोधन दिया है, ताकि यह ज्ञान हो सके कि कौन-सी बाणी किसके द्वारा रची गई है। सिख धर्म में इस बात पर पूर्ण विश्वास किया जाता है कि दस के दस गुरु साहिबान एक ही ज्योति-रूप थे, केवल मात्र वे शरीर ही बदलते रहे। भाई सत्ता जी और भाई बलवंड जी ने इस तथ्य को रामकली की वार में इस प्रकार वर्णन किया है :

लहणे दी फेराईऐ नानका दोही खटीऐ ॥
जोति ओहा जुगति साइ सहि काइआ फेरि पलटीऐ ॥ *(पन्ना ९६६)*

संगीतमयी बाणी

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी संसार भर में संगीतमयी बाणी के लिए प्रसिद्ध हैं। संगीत धरती के कण-कण में विद्यमान है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में अंकित सारी बाणी ३१ रागों और राग प्रकारों में उपलब्ध है। इन्हें रागों में गाने का संकेत है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब काव्य और संगीत का अच्छा सुमेल है। दुनिया के सभी धार्मिक ग्रंथों में श्री गुरु ग्रंथ साहिब ऐसे हैं जिनमें गुरु साहिबान ने अपने उपदेशों का प्रचार संगीत के माध्यम से किया है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की विशेषता यह भी है कि सारी बाणी काव्य रूप में अंकित की गई है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब के अतिरिक्त संसार में कोई भी अन्य ग्रंथ ऐसा नहीं है जिसमें विभिन्न विषयों, संगीत और बाणी का अच्छा सुमेल हो। संगीत का मुख्य उद्देश्य मनुष्य को सुख, शांति प्रदान करना है। इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए गुरबाणी का प्रचार किया जाता है। गुरबाणी की प्रत्येक पंक्ति प्रेरणा, भाषा और संगीत के खजाने से भरपूर है। गुरबाणी में भिन्न-भिन्न प्रकार के सहज रसों, अलंकारों और साजों का वर्णन किया गया है।

भाषायी एकसुरता

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में अंकित बाणी की भाषा पंजाबी, साध भाषा, प्राकृत, अपभ्रंश, ब्रज, अवधी, गुजराती, मराठी, बंगला और फारसी आदि के शब्दों का मिश्रण है। गुरमति के अनुसार अपनी विचारधारा को आम लोगों तक पहुंचाने के लिए बाणीकारों ने लोक-बोली को अपने निर्मल विचारों को प्रकट करने का माध्यम बनाया। व्यापक रूप में श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की भाषा चाहे पंजाबी की तरफ झुकाव रखती है और स्थानीय पंजाबी की भाषकता से प्रभावित है परन्तु इसमें मध्यकालीन भारत की बहुत-सी भाषाओं के कई शब्द अवश्य

मिल जाते हैं। इसमें उप-भाषाओं के संकेत भी मिलते हैं। इतनी विभिन्नताओं के बावजूद भी श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की भाषा में एकसुरता व एकरूपता है।

सर्वसांझा संदेश

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की विशेषता यह भी है कि इसकी बाणी बहुत सरल और विश्वव्यापी महत्ता रखने वाली है। इससे सारी मानवता सही ज्ञान हासिल कर सकती है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का संदेश सर्वसांझा है। इसे अपनाने के लिए कोई शर्त नहीं है। प्रत्येक देश, नस्ल और धर्म का व्यक्ति श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के अनुसार अपना जीवन व्यतीत कर सकता है। इसका संदेश किसी खास व्यक्ति, वर्ग, देश, कौम या धर्म के पैरोकारों के लिए नहीं है, बल्कि सारी बाणी समूची मानवता को सर्वसांझा संदेश व सही शिक्षा देती प्रतीत होती है। गुरबाणी का सम्बंध मनुष्य के चेहरे के साथ नहीं है बल्कि इसका सम्बंध मनुष्य की आत्मा के साथ है। यह बाणी बिना किसी भेद-भाव के समूचे विश्व को सही शिक्षा देती है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में जिन महापुरुषों की बाणी शामिल की गई है वे किसी एक धर्म या क्षेत्र के साथ सम्बंधित नहीं थे, न ही उनका समय एक था, न उनकी जाति एक थी, बल्कि उनकी सोच एक थी, विचार एक था और संदेश भी एक जैसा ही देते थे। बाबा फरीद जी मुसलमान थे और १२वीं सदी के साथ सम्बंध रखते थे। श्री गुरु तेग बहादर जी नौवें सिख गुरु थे और उनका सम्बंध १७वीं सदी के साथ था।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब धार्मिक, भाषायी, भूगौलिक और कलात्मक सीमाओं से ऊपर उठ कर विश्वव्यापी नैतिक कीमतों, प्रभु की एकता, मनुष्य की बराबरता, मानवीय अधिकारों की सुरक्षा का उपदेश देते हैं। इसकी सारी बाणी का संदेश 'सरबत्त दा भला' है।

विचारमयी ग्रंथ

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की बाणी भक्ति और प्रेरणा का अच्छा सुमेल है, श्री गुरु ग्रंथ साहिब विचारमयी ग्रंथ हैं। सिख धर्म के संस्थापक श्री गुरु नानक देव जी की पावन बाणी 'जपु जी साहिब' को बहुत सम्मानयोग्य स्थान प्राप्त है। केवल सिखों में ही नहीं दूसरे धर्मों से सम्बंधित लोगों में भी यह बाणी काफी लोकप्रिय है। जपु जी साहिब जी का आरंभ मूल-मंत्र के साथ हुआ है, जिसे पूरे श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में बहुत-सी बाणियों के आरंभ में मंगलमयी तौर पर अंकित किया गया है। मूल-मंत्र में सिख धर्म का सार शामिल है। यह परमतत्व प्रभु के गुणों का वर्णन करता है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में अंकित बाणी 'सुखमनी' पांचवें गुरु साहिब जी द्वारा उच्चरित है, इसे प्राय: 'शांति का भजन' भी कहा जाता है। भले ही सारी बाणी सुखदायिनी है मगर ऐसा माना जाता है कि यह बाणी परेशान लोगों को विशेष तौर पर धीरज और शांति प्रदान करती है। सुखमनी साहिब का पाठ जिंदगी के प्रत्येक हालात में प्रभु के हुक्म में रह कर उसे मानने की हिम्मत प्रदान करता है और मनुष्य को एक नई दिशा और मन की शांति देता है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज सारी बाणी सिखों में समान रूप से माननीय है। सारी बाणी मनुष्य को शांति, खुशी, साहस और इच्छा-शक्ति प्रदान करती है जो भक्ति का आधार है। यह प्रभु के बारे में ज्ञान हासिल करने का प्रयत्न है और संसार को संगठित रूप से देखने का दृष्टिकोण प्रदान करती है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी मानवीय जीवन के धार्मिक विचारों को प्रकट करती है और मनुष्य द्वारा इस धरती पर जन्म लेने के उद्देश्य का वर्णन करती है। गुरु साहिबान ने सारी मानवता को शांति, आपसी

प्रेम, आध्यात्मिक मुक्ति और सारी मानवता की भलाई के लिए विशाल विचारधारा, दृष्टिकोण और ज्ञान के स्रोत श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी को सम्पादित किया था। वास्तव में श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी उच्चतम ज्ञान और आध्यात्मिक अनुभव का विशाल भंडार हैं।

सभ्याचारक पक्ष

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की एक अन्य विशेषता इसका सभ्याचारक अंश है। इस महान ग्रंथ में खुशी, गमी के प्रत्येक मौके के अनुसार शबद अंकित किए गए हैं। ऋतुओं, तिथियों, त्यौहारों, बारह महीने, जन्म, मृत्यु, विवाह, लावां, घोड़ियां, अलाहणीआं आदि का आध्यात्मिक प्रसंग में वर्णन इस महान ग्रंथ ने अपने आप में समेटा हुआ है। काव्य रूप के भेदों में बारह माह, पउड़ी, काफी, पैंती अखरी, पटी, सलोक, रुती, थिती, घोड़ीआं, अलाहणीआं, पहरे आदि का प्रयोग किया गया है। भिन्न-भिन्न प्रकार के छंदों, दोहरा, सोरठा, चौपई, सवैये, सिरखंडी, चउपदे, दुपदे आदि का प्रयोग इस महान ग्रंथ में किया गया है।

अनेकता में एकता की मिसाल

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में अंकित बाणी केवल सिखों का ही मार्गदर्शन नहीं करती बल्कि सारी मानवता को सही दिशा देने में भी समर्थ है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में किसी धर्म को नकारा नहीं गया है। यह पावन ग्रंथ अपने अकीदे पर अमल करने की प्रेरणा देता है :

पहिला सचु हलाल दुइ तीजा खैर खुदाइ ॥
चउथी नीअति रासि मनु पंजवी सिफति सनाइ ॥
करणी कलमा आखि कै ता मुसलमाणु सदाइ ॥
(पन्ना १४१)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी मुसलमान को अपना अकीदा याद रखने और उस पर अमल करने के लिए प्रेरणा देते हैं। इसकी बाणी मुसलमान को इस्लाम छोड़ने के लिए नहीं बल्कि सच्चा मुसलमान बनने की प्रेरणा देती है :

मुसलमानु करे वडिआई ॥
विणु गुर पीरै को थाइ न पाई ॥
राहु दसाइ ओथै को जाइ ॥
करणी बाझहु भिसति न पाइ ॥ (पन्ना १४१-४२)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में अंकित बाणी में ब्राह्मण को भी याद दिलाया गया है कि ब्राह्मण का असल फर्ज क्या है :

ब्रहमु बिंदे सो ब्राहमणु कहीऐ जि अनदिनु हरि लिव लाए ॥
सतिगुर पुछै सचु संजमु कमावै हउमै रोगु तिसु जाए ॥
हरि गुण गावै गुण संग्रहै जोती जोति मिलाए ॥
(पन्ना ५१२)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब सामाजिक बंटवारे से मुक्ति दिलाते हैं। इनके अनुसार सारी मानवीय नस्ल एक है। बड़ा और ऊंचा वह मनुष्य है जो प्रभु की भक्ति करे और सच्ची जिंदगी के अनुसार जीवन व्यतीत करे :

ब्राहमणु खत्री सूद वैस चारि वरन चारि आस्रम हहि जो हरि धिआवै सो परधानु ॥ (पन्ना ८६१)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी को धार्मिक दृष्टिकोण के अनुसार विचारने से इसकी यह विशेषता उभर कर सामने आती है कि संसार के ये पहले महान ग्रंथ हैं जिनमें सभी देश, नस्ल की विभिन्नताओं को खत्म करके हिन्दू, मुसलमान और अछूत कहे जाने वाले महापुरुषों की बाणी को भी एकत्रित करके बराबर का सम्मान दिया गया है। इसमें कई सदियों के प्रमुख धर्मों और उनके पैरोकारों की बाणी भी अंकित की गई है जिनके विचार गुरमति के अनुसार मेल खाते थे।

गृहस्थ जीवन की उच्चता

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी ने सम्पूर्ण संसार को एक अच्छा और सुथरा जीवन व्यतीत करने

(शेष पृष्ठ २३ पर)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब के भक्त बाणीकारों की बाणी

*-कवीशर स्वर्ण सिंघ 'भौर'**

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में भक्ति लहर के भक्त साहिबान की पावन बाणी अंकित है। भक्ति लहर का समय शांति का समय नहीं था। उस समय दोनों मुख्य धर्म--हिंदू मत और इस्लाम मत वास्तविक धर्म-धारणा से दूर व अपनी-अपनी हउमै के शिकार थे। भक्त कबीर जी ने इसका स्पष्ट संकेत किया। भक्त जी कथन करते हैं :

रज गुण तम गुण सत गुण कहीऐ इह तेरी सभ माइआ ॥
चउथे पद कउ जो नरु चीन्है तिन्ह ही परम पदु पाइआ ॥ *(पन्ना ११२३)*

भक्त जी की बाणी भक्ति-मार्ग पर चलने का रास्ता दर्शाती है। भक्त जी का फरमान है कि भक्ति-भावना में आडंबर की कोई जगह नहीं है। भक्ति करने वाला इंसान निर्मल व पवित्र हो जाता है। फरमान है :

परिओ कालु सभै जग ऊपर माहि लिखे भ्रम गिआनी ॥
कहु कबीर जन भए खालसे प्रेम भगति जिह जानी ॥ *(पन्ना ६५४-५५)*

परमात्मा की भक्ति करने वाला सबको वृक्ष के समान सुख एवं उपहार देता है। दया और उपकार उसका मूल स्वभाव होता है :

कबीर दाता तरवरु दया फलु उपकारी जीवंत ॥
पंखी चले दिसावरी बिरखा सुफल फलंत ॥
(पन्ना १३७६)

भक्त जी कहते हैं कि धर्म कमाने की चीज है न कि दिखाने की। पानी बिलोवने से कुछ नहीं होगा :

ह्रिदै कपटु मुख गिआनी ॥
झूठे कहा बिलोवसि पानी ॥ *(पन्ना ६५६)*

जो मनुष्य कहता है कि मैंने इतना दान दिया, इतने तीर्थों के स्नान किये वह मनुष्य हउमै का शिकार है और वास्तविक धर्म से दूर है। हमें नरक का भय और स्वर्ग की आशा छोड़ कर परमात्मा का सिमरन करना चाहिए फिर कुछ प्राप्त होगा। कथन है :

कवनु नरकु किआ सुरगु बिचारा संतन दोऊ रादे ॥
हम काहू की काणि न कढते अपने गुर परसादे ॥ *(पन्ना ९६९)*

भक्त नामदेव जी ने अपने मूल स्थान महाराष्ट्र से चलकर पंजाब की धरती को भी अपने चरण-स्पर्श से कृतार्थ किया। भक्त नामदेव जी जब घुमाण आये तो आप पंजाबियत का अंग बनकर उभरे। प्रभु-नाम की अथाह कमाई से आपकी महिमा का व्यापक रूप से पासार हुआ। श्री गुरु अरजन देव जी ने परमात्मा के सिफती नामों की एक सूची तैयार की जिसमें उसका नाम 'बीठुला' भी आया है:

पीत पीतंबर त्रिभवण धणी ॥
जगंनाथु गोपालु मुखि भणी ॥
सारिंगधर भगवान बीठुला मै गणत न आवै सरबंगा ॥ *(पन्ना १०८२)*

भक्त रविदास जी की पावन बाणी श्री गुरु ग्रंथ साहिब में संकलित है। भक्त जी ने जात-पात में फंसे लोगों को इससे ऊपर उठने का संदेश दिया। आप जी अपनी बाणी में

**गांव और डाक : सरली कलां, तहसील : खडूर साहिब, जिला : तरनतारन। फोन: ९४१७८-५३६९३*

अपना हवाला अंकित करते हैं :

--मेरी जाति कमीनी पांति कमीनी ओछा जनमु हमारा ॥
तुम सरनागति राजा राम चंद कहि रविदास चमारा ॥ (पन्ना ६५९)

--मेरी जाति कुट बांढला ढोर ढोवंता नितहि बानारसी आस पासा ॥
अब बिप्र परधान तिहि करहि डंडउति तेरे नाम सरणाइ रविदासु दासा ॥ (पन्ना १२९३)

भाई गुरदास जी भक्त जी का भक्ति-लहर में असीम योगदान प्रकट करते हुए कथन करते हैं :

भगतु भगतु जगि वजिआ चहु चकां दे विचि चमिरेटा। . . .
जिउ करि मैले चीथड़े हीरा लालु अमोलु पलेटा।
चहु वरना उपदेसदा गिआन धिआन करि भगत सहेटा। (वार १०:१७)

भक्त रविदास जी निर्भीक विचारों के धारणी थे। इनके अमूल्य विचारों से युक्त बाणी को श्री गुरु ग्रंथ साहिब में स्थान देकर पंचम गुरु जी ने अमर कर दिया।

भक्त फरीद जी श्री गुरु ग्रंथ साहिब में अंकित अपनी बाणी में प्रभु-भक्ति की प्रेरणा देते हुए कथन करते हैं कि साईं के नाम का चिंतन करना चाहिए। प्रभु-भक्ति करने वाले मीठे फल प्राप्त करते हैं :

पहिलै पहरै फुलड़ा फलु भी पछा राति ॥
जो जागंन्हि लहंनि से साई कंनो दाति ॥
(पन्ना १३८४)

अज्ञानी जीव नेकी का मार्ग छोड़कर बुराई के रास्ते पर चलता है, अच्छे कर्म तो करता नहीं परंतु मीठा फल प्राप्त करना चाहता है :

फरीदा लोड़ै दाख बिजउरीआं किकरि बीजै जटु ॥
हंढै उंन कताइदा पैधा लोड़ै पटु ॥ (पन्ना १३७९)

श्री गुरु रामदास जी और श्री गुरु अरजन देव जी ने अपनी पावन बाणी में भक्ति लहर के भक्त साहिबान के बारे में बहुत भावभीना वर्णन किया है। श्री गुरु रामदास जी फरमान करते हैं :

नामा जैदेउ कंबीरु त्रिलोचनु अउजाति रविदासु चमिआरु चमईआ ॥
जो जो मिलै साधू जन संगति धनु धंना जटु सैणु मिलिआ हरि दईआ ॥ (पन्ना ८३५)

श्री गुरु अरजन देव जी के निर्मल वचन हैं:

गोबिंद गोबिंद गोबिंद संगि नामदेउ मनु लीणा ॥
आढ दाम को छीपरो होइओ लाखीणा ॥१॥रहाउ॥
बुनना तनना तिआगि कै प्रीति चरन कबीरा ॥
नीच कुला जोलाहरा भइओ गुनीय गहीरा ॥१॥
रविदासु ढुवंता ढोर नीति तिनि तिआगी माइआ ॥
परगटु होआ साधसंगि हरि दरसनु पाइआ ॥२॥
सैनु नाई बुतकारीआ ओहु घरि घरि सुनिआ ॥
हिरदे वसिआ पारब्रहमु भगता महि गनिआ ॥३॥
इह बिधि सुनि कै जाटरो उठि भगती लागा ॥
मिलै प्रतखि गुसाईआ धंना वडभागा ॥४॥२॥
(पन्ना ४८७-८८)

भक्त धंना जी ने राग धनासरी में प्रभु की महिमा करते हुए उनके समक्ष दैनिक जीवन में जरूरत की चीजों का मांग-पत्र प्रस्तुत किया है।

भक्त रामानंद जी की भक्ति लहर में बहुत बड़ी देन है। भक्त रामानंद जी के श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज पावन शबद की आरंभिक पंक्तियां हैं :

कत जाईऐ रे घर लागो रंगु ॥
मेरा चितु न चलै मनु भइओ पंगु ॥१॥रहाउ॥
एक दिवस मन भई उमंग ॥
घसि चंदन चोआ बहु सुगंध ॥
पूजन चाली ब्रहम ठाइ ॥
सो ब्रहमु बताइओ गुर मन ही माहि ॥
(पन्ना ११९५)

भक्त जी वचन करते हैं कि ब्रह्म (प्रभु) कहीं बाहर नहीं बल्कि हृदय में ही उसका

निवास है। भक्त जी की शैली से उनका धर्म-अध्ययन परिलक्षित होता है।

भक्त भीखन जी की बाणी सिरीरागु और राग सोरठि में उपलब्ध है। आप जीव के रोगों और दुखों में उनसे सहानुभूति रखते हुए उन्हें प्रभु-नाम का आत्मिक सुखों भरा मार्ग बताते हैं:

नैनहु नीरु बहै तनु खीना भए केस दुध वानी ॥
रूधा कंठु सबदु नही उचरै अब किआ करहि परानी ॥ . . .
माथे पीर सरीरि जलनि है करक करेजे माही ॥
ऐसी बेदन उपजि खरी भई वा का अउखधु नाही ॥
हरि का नामु अंम्रित जलु निरमलु इहु अउखधु जगि सारा ॥
गुर परसादि कहै जनु भीखनु पावउ मोख दुआरा ॥
(पन्ना ६५९)

श्री गुरु अरजन देव जी ने अपनी बाणी में जहां अन्य भक्तों का उल्लेख किया वहीं भक्त त्रिलोचन जी का भी वर्णन किया है। भक्त बेणी जी भी श्री गुरु ग्रंथ साहिब में सम्मिलित बाणीकार हैं। भट्टों की बाणी में भक्त बेणी जी के बारे में अंकित है :

भगतु बेणि गुण रवै सहजि आतम रंगु माणै ॥
जोग धिआनि गुर गिआनि बिना प्रभ अवरु न जाणै ॥
(पन्ना १३९०)

भक्त सूरदास जी की राग सारंग में एक पावन पंक्ति श्री गुरु ग्रंथ साहिब में अंकित है:

छाडि मन हरि बिमुखन को संगु ॥
(पन्ना १२५३)

यह पावन शबद श्री गुरु अरजन देव जी ने स्वयं पूरा किया हुआ है।

भक्त पीपा जी का धनासरी राग में एक शबद श्री गुरु ग्रंथ साहिब में अंकित है। भक्त परमानंद जी का उच्चारण किया हुआ एक शबद राग सारंग में संकलित है। भक्त जैदेव जी के दो पावन शबद एक--राग गूजरी में और दूसरा राग मारू में दर्ज है।

कविता

वृक्षों की संभाल

वृक्ष बचाओ सभी, इनकी संभाल करो,
फिजा बिना इनके कहीं, होवे न खवार जी!
एक रुक्ख सौ सुख, कहा बुद्धिमानों ने है,
काहे को गंवाओ फिर, सुखों का आधार जी!
वृक्ष मनुष्य को हैं, जीवन-वरदान देते,
स्वयं शीश पर ठंड, धूप को सहार जी!
आदर्श मिसाल हैं ये, रखो सदा सामने यह,
करना सीखें आओ इनसे, परोपकार जी।
वृक्षों के साथ सांझ, जन्म से मृत्यु तक,
वृक्ष घर बाहर का हैं, बनते श्रृंगार जी।
तन को आराम देते, रूह को सकून बड़ा,
मन खिल जाए देख, इनकी बहार जी।
देते ही देते और, लेते नहीं हमसे कुछ,
क्यों न संभालें फिर करके विचार जी?
देते हरियाली और देते खुशहाली हमें,
मीठे फल देते लीला, रची करतार जी।
कॉलेजों, स्कूलों एवं सड़कों पर लगाओ पौधे,
ताकि वृक्ष बन छाया, घनी दें अपार जी।
फलदार वृक्षों के भी, बागों को संभालें हम,
रक्त बढ़ाता अमरूद व अनार जी।
घरों बीच नीम, शीशम, अमलतास बहुत अच्छे,
सभी के सभी हैं देते जिंदगी संवार जी।
पीपल और बोहड़ की तो बात ही न कही जाए,
समस्त ग्राम को हैं बांटते प्यार जी।
वृक्षों की संभाल से ही, कायम संसार जी!
वृक्षों की संभाल से ही, खिले गुलज़ार जी!
वृक्षों की संभाल को न देना विसार जी!
तन-मन सौंप 'भौर', जाओ बलिहार जी!

श्री गुरु ग्रंथ साहिब के भट्‌ट बाणीकार

-डॉ. रछपाल सिंघ*

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में ११ भट्‌ट बाणीकारों की बाणी पन्ना १३८९ से १४०९ तक अंकित है। इन भट्‌ट बाणीकारों ने पहली पातशाही श्री गुरु नानक देव जी से पांचवीं पातशाही श्री गुरु अरजन देव जी तक की स्तुति गायन की है। भट्‌ट साहिबान के सवैयों की कुल गिनती १२३ है, जिसमें सवैये महले पहले के १०, सवैये महले दूजे के १०, सवैये महले तीजे के २२, सवैये महले चौथे के ६० और सवैये महले पंजवें के २१ सवैये हैं। भट्‌ट बाणीकारों में से श्री कल सहार जी के सवैये गिनती में सभी से अधिक हैं। पहले और दूसरे गुरु साहिबान के सारे सवैये कल सहार जी के ही हैं। तीसरे, चौथे और पंचम सतिगुरु जी के सवैयों का आरंभ भी भट्‌ट कल सहार जी की कलम द्वारा रची हुई बाणी से ही होता है। भट्‌ट-बाणी रचना की गिनती इस प्रकार है:

(१) भट्‌ट कल सहार जी ५४ सवैये (२) भट्‌ट मथरा जी १४ सवैये (३) भट्‌ट गयंद जी १३ सवैये (४) भट्‌ट नल जी १६ सवैये (५) भट्‌ट कीरत जी ८ सवैये (६) भट्‌ट जालप जी ५ सवैये (७) भट्‌ट बल जी ५ सवैये (८) भट्‌ट सल जी ३ सवैये (९) भट्‌ट भिखा जी २ सवैये (१०) भट्‌ट हरिबंस जी २ सवैये (११) भट्‌ट भल जी १ सवैया।

भट्‌ट बाणीकारों की बंसावली

भट्‌ट बाणीकारों के पूर्वज श्री भागीरथ भट्‌ट थे, जिनके नौवें वंश में से श्री रईया भट्‌ट हुए हैं। कुछ विद्वानों ने भट्‌ट बाणीकारों के पूर्वज श्री कौशिक ऋषि को भी माना है।

रईया भट्‌ट के ६ पुत्र थे— भिखा, सोखा, तोखा, गोखा, चोखा, टोडा।

रईया भट्‌ट के पुत्रों में से भट्‌ट भिखा जी आयु में सबसे बड़े थे। यह श्री गुरु अमरदास जी की संगत भी करते थे। लगता है कि भट्‌ट भिखा जी के पुत्र और भतीजे भी गुरु-दरबार में हाजरी भरते रहते होंगे।

ये भट्‌ट ब्राह्मण (सारसुत) थे। इनकी उपजीविका में अपने जजमानों और रजवाड़ों की प्रशंसा करना, दूर-दूर इलाकों में घूमना-फिरना और अपने जजमानों की बंसावलियां अपने बही-खातों में लिखना था।

(क) भट्‌ट भिक्खा जी के तीन पुत्र थे— भट्‌ट जालप जी, भट्‌ट मथरा जी, भट्‌ट कीरत जी।

(ख) भट्‌ट सोखा जी के दो पुत्र थे— भट्‌ट सल जी, भट्‌ट भल जी।

(ग) भट्‌ट तोखा जी का एक पुत्र था— भट्‌ट बल जी।

(घ) भट्‌ट गोखा जी का एक पुत्र था— भट्‌ट हरिबंस जी।

(ङ) भट्‌ट चोखा जी के दो पुत्र थे— भट्‌ट कल जी, भट्‌ट गयंद जी।

विद्वानों का यह मत है कि ये भट्‌ट श्री गुरु अरजन देव जी के समय गुरु-दरबार में आए थे और उन्होंने गुरु-महिमा में सवैये गायन किए थे।

भट्‌ट बाणीकारों के जीवन के बारे में खोज प्रारंभिक पड़ाव में है। ये भट्‌ट आत्मिक शांति की खोज में लंबा समय भटकते रहे।

*पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, क्षेत्रीय खोज केंद्र, गुरदासपुर (पंजाब)-१४३५२१

बहतु से तीर्थ गए, साधू-संत-जनों के पास गए, पर इनके मन को कहीं से भी शांति न मिली। श्री गुरु अमरदास जी के दरबार की प्रशंसा करते हुए भट्ट भिखा जी लिखते हैं कि उन्होंने बहुत से साधू-संतों के दर्शन किए। इस प्रकार एक साल भटकना में भटकते रहे। कहीं से भी सहज अवस्था प्राप्त न हुई। श्री गुरु अमरदास जी की संगत और दर्शन करके, उनके मन को अब पूर्ण शांति मिल गई है, मन में खुशी आ गई है। इसलिए उन्होंने अपना तन, मन और धन सभी कुछ गुरु जी को अर्पण कर दिया है। गुरु-दरबार की सेवा और गुरु-हुक्म ही उनके लिए सर्वोच्च है।

भट्ट बाणी की विशेषता इस बात में भी है कि उन्होंने जिन गुरु साहिबान की स्तुति गायन की है, उनके जीवन और घटनाओं का उल्लेख नहीं किया है अर्थात गुरु साहिबान के जीवन से संबंधित घटनाएं, समकालीन राजाओं, गुरु-दरबार की सज्जा-धज्जा, प्रमुख सिखों इत्यादि का चित्रण नहीं किया है। उन्होंने केवल गुरु साहिबान के निरोल आध्यात्मिक ब्रह्म स्वरूप का ही उल्लेख किया है। उन्होंने केवल गुरु-महिमा को ही अपनी बाणी का विषय-वस्तु बनाया है।

श्री गुरु नानक देव जी से लेकर श्री गुरु अरजन देव जी तक पांच गुरु साहिबान की गुरगद्दी परंपरा का चित्रण उन्होंने अत्यंत प्रभावशाली ढंग से किया है— सारे "गुरु साहिबान अकाल पुरख का प्रत्पक्ष रूप, एक ज्योति, एक युक्ति के मानिक हैं। वे शारीरिक रचना करके चाहे संसारी लोगों को अलग-अलग प्रतीत होते हों परन्तु आत्मिक उच्चता से इनमें रत्ती भर भी अंतर नहीं है। समय-समय अनुसार एक ज्योति दूसरी ज्योति में सम्मिलित होती गई, तत्व से तत्व मिल गया। सारे गुरु साहिबान एक ही ज्योति के मालिक थे। श्री गुरु नानक देव जी से श्री गुरु अरजन देव जी तक सारे ही पंच प्रवाण पुरख हैं।"

गुरु साहिबान की प्रशंसा में भट्ट बाणीकारों द्वारा प्रयोग की गई शब्दावली, शब्द-जोड़, अलंकार कमाल के हैं। उन्होंने गुरु साहिबान को 'सरब कला समरथ', 'सरब शक्तिमान', 'सरब रोगों का निवारक', 'सरब सुखों का दाता', 'लोक-परलोक में सहाई', 'सभ प्रकारी मन-इच्छित फल देने वाले' कहा है। भट्ट बाणी में बार-बार तीव्र भावपूर्ण रूप में विचारभाव व्यक्त किया गया है कि जो व्यक्ति गुरु साहिब की सेवा और हुक्म में रहकर, गुरु की खुशियां प्राप्त करते हैं, उनको लोक-परलोक में किसी प्रकार के भी शारीरिक अथवा मानसिक कष्ट नहीं आ सकते अर्थात गुरु-शरण में रहने वाले सदा ही आनंद-प्रसन्नता में रहते हैं।

कविता

सिक्खी

-डॉ. सुरिंदरपाल सिंघ*

सिक्खी कुर्बानियों की कार।
सिक्खी शहादत का किरदार।
सर्वसांझ का सभ्याचार, सिक्खी सभी से प्रेम-प्यार।
सिक्खी नारी का सत्कार,
चढ़दी कला बुलंद जयकार।
सिक्खी जात-पात पे धिक्कार,
सिक्खी-धर्म कर्म महकार।
सिक्खी जलती ज्योति युग चार।
सिक्खी सेवा, साधना, संचार।
सिक्खी खुशी से करे विकास, विचार।
सिक्खी विकासों की पहरेदार।
गुरदेव महान रख नींव कर नींव गए,
बनी जो इस आधारा आधार।
सिक्खी कुर्बानियों की कार।
सिक्खी शहादत का किरदार।

*पत्तण वाली सड़क, पुराना शाला, गुरदासपुर।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का साहित्यिक महत्त्व

*-स. बिक्रमजीत सिंघ**

जैसे संसार में अलग-अलग धर्मों के अपने-अपने धार्मिक ग्रंथ हैं ठीक उसी प्रकार सिक्ख धर्म के धार्मिक ग्रंथ श्री ग्ररु ग्रंथ साहिब हैं। दुनिया के हरेक धर्म के ग्रंथ का अपना-अपना सम्मानयोग स्थान एवं महत्त्व है, परन्तु श्री गुरु ग्रंथ साहिब की पदवी इसलिए सर्वोत्तम और महान है चूंकि दुनिया के किसी भी धर्म के धार्मिक ग्रंथ को 'गुरु' का दर्जा अथवा पदवी नहीं दी गई, केवल श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी ही हैं जिनको प्रत्यक्ष 'गुरु' होने का स्थान प्राप्त है। इस पावन ग्रंथ की दूसरी महानता यह है कि वे केवल एक विशिष्ट धर्म को ही नहीं बल्कि समूची मानवता को अगुवाई प्रदान करते हैं।

विश्व के सभी ग्रंथों में से केवल श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी ही ऐसे धर्म-ग्रंथ हैं जिनको श्री गुरु अरजन देव जी ने समय की जरूरत को भांपते हुए अपनी निज देख-रेख अधीन श्री अमृतसर में (सन् १६०१ से १६०४ ई तक) संपादित किया, जिसके लिखारी भाई गुरदास जी थे। इसके उपरांत दशम पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने तलवंडी साबो नामक स्थान पर १७०६ ई में इसमें श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी की बाणी शामिल कर सम्पूर्णता प्रदान की तथा सन् १७०८ ई में अबिचल नगर श्री हजूर साहिब, नांदेड़ (महाराष्ट्र) में इस पावन ग्रंथ को गुरु-पदवी प्रदान की। इसके कुल १४३० पन्ने हैं और अधिकांश बाणी रागों पर अधारित है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में कुल ६ सिक्ख गुरु साहिबान--श्री गुरु नानक देव जी, श्री गुरु अंगद देव जी, श्री गुरु अमरदास जी, श्री गुरु रामदास जी, श्री अरजन देव जी और श्री गुरु तेग बहादर जी की बाणी शामिल है। इनके अलावा इस महान ग्रंथ में अलग-अलग जातियों, भाषाओं, क्षेत्रों और धर्मों से संबंधित १५ भक्त साहिबान की बाणी को भी शामिल किया गया है। इसके साथ ११ भट्ट साहिबान की और गुरु-घर के निकटवर्ती कुछ गुरसिक्खों की बाणी भी शामिल है। गुरु साहिबान के अलावा इन महापुरुषों की बाणी का श्री गुरु ग्रंथ साहिब में शामिल होने का कारण इनका गुरमति के अनुकूल होना था।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में वही बाणी शामिल की गई जिसमें पावन एकता, बन्धुत्व, आशावादी स्वर और जो हर प्रकार के नस्लीय भेदभाव, धार्मिक कठोरता से ऊपर हो और समूची मानवता को एक माला में पिरो दे। यह बात भी विचारयोग्य है कि काहना, पीलू, छज्जू और शाह हुसैन जैसे कवि भी अपनी रचनाएं लेकर श्री गुरु अरजन देव जी के पास गए, परन्तु उनकी रचनाओं को श्री गुरु ग्रंथ साहिब में शामिल न किया गया, क्योंकि उनकी रचनाओं में घोर निराशा के भाव इत्यादि उत्पन्न होते थे जो कि गुरमति विचारधारा के अनुकूल नहीं थे।

संपादन-कला की दृष्टि से श्री गुरु ग्रंथ साहिब एक लासानी धर्मग्रंथ है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में बाणी को रागों पर आधारित करके संगीतक पक्ष से भी सर्वोच्च बना दिया। इसकी पावन बाणी सभी साहित्यक गुणों से मालामाल है।

अगर श्री गुरु ग्रंथ साहिब का विषय-क्षेत्र देखा जाए तो इसके घेरे में रहस्यवाद, अध्यात्मवाद,

**सपुत्र स. रणजीत सिंघ, २९४६/७, बाजार लोहारां, चौक लछमणसर, श्री अमृतसर-१४३००६*

सामाजिक, नैतिक सदाचारक विचारधाराएं स्पष्ट रूप से प्रकट होती हैं। प्रमुख तौर पर जो विषय हैं उनमें जीव, आत्मा, मोक्ष, संसार इत्यादि प्रमुख भावपूरित संकल्पों के सम्मुख कराया गया है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में बाणी की तरतीब की बात करें तो सबसे पहले श्री गुरु नानक देव जी की शाहकार रचना "जपु जी", जिसे समूची गुरबाणी की कुंजी माना जाता है, दर्ज की गई है। इसके बाद सो दरु, सो पुरख, सोहिला तथा शेष बाणी शामिल की गई है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब की मूल भाषा पंजाबी है। इसके अलावा इसमें अलग-अलग श्रोतों, पश्चिमी, पंजाबी, पोठोहारी, पहाड़ी, मलवई भाषाओं के शब्द भी मिलते हैं। इसमें साध-भाषा का भरपूर प्रयोग हुआ है। संस्कृत, राजस्थानी, गुजराती, बंगाली, हिंदी, ब्रज, मराठी, अवधी, सिंधी, प्रकृत, अपभ्रंष का प्रयोग भी हुआ है। इसके अलावा अलग-अलग भाषाओं के तत्सम और तद्भव रूप भी मिलते हैं। यही एक ऐसा पावन ग्रंथ है जिसमें पुरातन भारतीय भाषाओं के नमूने सुरक्षित हैं।

सरलता, संयम, स्वाभाविकता जैसे तत्व श्री गुरु ग्रंथ साहिब में विद्यमान हैं, जैसे :

--दुखु दारू सुखु रोगु भइआ . . ॥ (पन्ना ४६९)

-- . . . मन जीतै जगु जीतु ॥ (पन्ना ६)

--हकु पराइआ नानका उसु सूअर उसु गाइ ॥ (पन्ना १४१)

अगर छंद प्रबंध की दृष्टि से देखा जाए तो इस पावन ग्रंथ का कोई सानी नहीं। पुरातन कविता और लोक-धारणा के जितने नमूने इस पावन ग्रंथ में मिलते हैं वे और कहीं प्राप्त नहीं होते। बहुत-से काव्य-रूप, जैसे अष्टपदी, बारह माहा, आरती, घोड़ीआं, अलाहुणीआं, पटी, बावन अखरी, सतवारा, वार, पउड़ी, रुती, थिती, पहरे, बणजारे, सलोक, दोहे, चौपई, सोरठा, सवईया, दवईया, झूलणा, सिरखंडी इत्यादि इस महान ग्रंथ में पेश हुए मिलते हैं।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी द्वारा बाणीकारों ने समूची मानवता को दिव्य-ज्ञान के अनुभव के जरिए आपसी प्यार, नम्रता, धैर्य, संतोष, सहनशीलता, सहजता और स्वै-विश्वास इत्यादि शुभ गुणों का संचार करना चाहा, इसलिए उन्होंने अपने विचारों का वाहन, जन-मानस में उत्सर्जित लोक-गीतों में स्थापित हो चुकी धारणाओं और प्रचलित काव्य-रूढ़ियों को बनाया, चूंकि आम लोगों के जीवन की हर धड़कन में इनके सजीव तत्व हर समय मौजूद थे। यह भी एक हकीकत है कि किसी भी समाज को किसी भी करामात के जरिए बदला नहीं जा सकता। उसमें तबदीली तभी संभव हो सकती है अगर उनके जन्म से लेकर मृत्यु तक के बन चुके विचारों अथवा धारणाओं में नयी चेतनता, नयी दिशा और कुछ कर सकने की चाहत भरी जाए। अत: गुरमति को संचारित करने वाले इन महापुरुषों ने लोक-हृदयों में प्रज्वलित मशालों का रूप बना कर समय के प्रचलित काव्य-रूपों में लोक-गीतों की धारणा, पूजा के समय गाये जाने वाले भजन और दोहे तथा प्रचलित संगीत पद्धतियों में अपनी बाणी रची। गुरबाणी में इस्तेमाल की गई लोक-धुनों को भी बाणी के संदेश को संचार करने हेतु ही इस्तेमाल किया गया है। वारों और इन लोक-ध्वनियों को पूर्व नानक काल में राजाओं, महाराजाओं, ठाकुरों और हुक्मरानों आदि को खुश करने के लिये गाया जाता था, परन्तु गुरु साहिबान ने इनका इस्तेमाल सांसारिक हुक्मरानों को खुश करने की जगह आम आदमी को मानव-गुलामी की जंजीरों से मुक्ति दिला कर प्रभु की स्तुति और निज जीवन को खुशहाल बनाने हेतु किया।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब काव्य की दृष्टि से सर्वोत्तम ग्रंथ है। इसमें अलंकारों के भी अत्यंत सुंदर नमूने मिलते हैं, जैसे :

--कामु क्रोधु काइआ कउ गालै ॥
जिउ कंचन सोहागा ढालै ॥
--दरसन परसन सरसन हरसन रंगि रंगी करतारी रे ॥ *(पन्ना ४०४)*

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में जहां बारह माहा तुखारी में प्रकृति-चित्रण है वहीं बारह माहा 'मांझ' में अध्यात्मवादी फलसफे की शिखर है।

जहां सुखमनी साहिब अष्टपदियों में लिखी गई संत-बाणी का अति उत्तम नमूना है वहीं गुरु नानक साहिब की सिधों से हुई गोष्ठि 'सिध गोसटि' प्रश्नोत्तरी शैली में रची गई ज्ञानवर्धक पावन बाणी है।

भारतीय काव्य परंपरा के सभी रस, जैसे शृंगार-रस, शांत-रस, वीर-रस इत्यादि बहुत ही स्पष्ट रूप से मिलते हैं। इस पावन ग्रंथ में पुरातन इतिहास, मिथिहास और सभ्याचार के अनेकों ही हवाले मिलते हैं। श्री गुरु ग्रंथ साहिब भाषाओं का एक जखीरा है, जो सभी धर्मों, श्रोतों, मजहबों, जातियों का प्रतिनिधित्व करता है, जिस कारण यह पावन ग्रंथ साहित्यिक पक्ष के साथ-साथ सामाजिक पक्ष और धार्मिक पक्ष से भी महत्वपूर्ण है।

इन सभी महत्वों के आधार पर श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के बहुत सारी दूसरी भाषाओं में भी अनुवाद हुए हैं, जैसे हिंदी, सिंधी, अंग्रेजी, जर्मन, उर्दू इत्यादि। विश्व प्रसिद्ध संस्था यूनेस्को ने भी श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के चुनिंदा भागों का अंग्रेजी में अनुवाद करवाया है।

अंत में यह कहा जा सकता है कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब सिक्ख धर्म के धर्म-ग्रंथ होने के साथ-साथ समूची मानवता की रूहानी एवं नैतिक अगुआई करने वाले दुनिया के साहित्य का अनमोल खजाना भी हैं, जिनका साहित्य पक्ष से भी बहुत महत्व है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की विशेषताएं

(पृष्ठ १५ का शेष)

का ज्ञान प्रदान किया है। गुरु जी ने मनुष्य को बताया है कि इस संसार में गृहस्थ जीवन व्यतीत करते हुए प्रभु के नाम को मन में याद करके अच्छा और नेक जीवन व्यतीत किया जा सकता है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी घर-गृहस्थी को छोड़कर योगी बनने को महत्व नहीं देते, ये गृहस्थी में रहते हुए प्रभु के नाम का सुमिरन करने और प्रभु की प्राप्ति का आदेश देते हैं। इसमें हिन्दुओं, मुसलमानों, योगियों, वैरागियों, सन्यासियों आदि के द्वारा फैलाए गए सभी प्रकार के वहमों आदि का खंडन करके समाज को नया जीवन-मार्ग दर्शाया गया है।

सतिगुर की ऐसी वडिआई ॥
पुत्र कलत्र विचे गति पाई ॥ *(पन्ना ६६१)*

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी यह शिक्षा देते हैं कि मनुष्य को सदीवी खुशी की प्राप्ति के लिए सांसारिक जिम्मेवारियों को त्यागने की आवश्यकता नहीं है। इसमें मुक्ति की प्राप्ति के लिए गृहस्थ जीवन में रहते हुए प्रभु का नाम-सुमिरन करने पर बल दिया है।

निष्कर्ष रूप में हम यह कह सकते हैं कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब ऐसे समाज की कल्पना करते हैं जहां न्याय है, सभी मनुष्य बराबर हैं और विश्वव्यापी भाईचारे की भावना पाई जाती है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब का अध्ययन इस बात का ज्ञान करवाता है कि सारी मानवता एक है, सभी आपस में बराबर हैं, सभी का रचनहार एक प्रभु है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की बाणी और संरचना मनुष्य को धर्म के नाम पर फैले हुए बंटवारों, जाति के नाम पर फैले हुए पक्षपातों से ऊपर उठने की प्रेरणा देती है।

विश्व-बन्धुत्व जीवन-पद्धति श्री गुरु ग्रंथ साहिब

*-स. सुरजीत सिंघ**

विश्व-बन्धुत्व आदर्श जीवन-पद्धति का संदेश श्री गुरु ग्रंथ साहिब का मूल सिद्धांत है। विश्व में प्रेम, भाईचारा, सुख-समृद्धि बनी रहे, समस्त का भला एवं कल्याण हो, किसी का बुरा न हो की भावना परिलक्षित हो रही है। गुरमति मार्ग के अनुसार बिना भेदभाव मनुष्य-मात्र से प्रेम ही परमात्मा से प्रेम है, मानवता की सेवा ही ईश्वर-सेवा है, दुखी, गरीब एवं असहाय को दिया दान ही धर्म है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में जहां गुरु साहिबान द्वारा रचित "धुर की बाणी" है वहीं उन संतों-भक्तों एवं पीरों की बाणी भी सम्मिलित है जिन्होंने अपने-अपने समय में श्री गुरु ग्रंथ साहिब के आदर्शों एवं सिद्धांतों के अनुरूप विश्व-कल्याणार्थ मानवता को उचित मार्गदर्शन दिया। गुरबाणी का उद्देश्य मानवता को आडम्बर, पाखंड एवं मिथ्यावाद के भटके हुये कुमार्ग से वर्जित कर, सत्य एवं आदर्श का मार्ग प्रदर्शित कर ईश्वर, प्रकृति एवं विश्व-बन्धुत्व का स्पष्ट ध्यान कराना है। इस पवित्र ग्रंथ के पठन एवं मनन से सभी प्रकार की शंकाओं का समूल निवारण होकर मन श्रद्धा एवं आस्था से प्रफुल्लित हो उठता है। गुरबाणी में मानव एवं प्रकृति के हर विषय का समाधान विद्यमान है।

सृष्टि-रचना

यह संसार एक ईश्वर की रचना है जिसका कोई रूप-रंग नहीं है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब के अनुसार समस्त प्राणियों का जन्म-दाता एक ईश्वर ही है जो सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक एवं कण-कण में समाया हुआ है। वह अकाल ज्योति युगों-युगों से स्थिर सत्य-स्वरूप है और भविष्य में भी सत्य रहेगी, जैसा कि जपु जी साहिब में प्रमाणित है :

आदि सचु जुगादि सचु ॥
है भी सचु नानक होसी भी सचु ॥ (पन्ना १)

मानव-प्रेम

गुरबाणी समस्त प्राणी-मात्र को आपस में मिल-जुल कर रहने, विश्व-एकता एवं मानव-प्रेम का संदेश देती है। संसार की हर एक वस्तु में वह दिव्य ज्योति समान रूप से विद्यमान हो रही है तो आपस में वैमनस्य कैसा? भेदभाव कैसा? ऊंच-नीच का अंतर कैसा? सभी तो समान रूप हैं *: "एकु पिता एकस के हम बारिक तू मेरा गुर हाई ॥"* गुरबाणी के अनुसार न तो कोई शत्रु है और न पराया, सब मित्र हैं :

ना को बैरी नही बिगाना सगल संगि हम कउ बनि आई ॥ (पन्ना १२९९)

समानता

मनुष्य जब जन्म लेता है तो उसकी कोई जात-पात नहीं होती। गुरबाणी के अनुसार :

जाति जनमु नह पूछीऐ सच घरु लेहु बताइ ॥
सा जाति सा पति है जेहे करम कमाइ ॥
(पन्ना १३३०)

श्री गुरु नानक देव जी ने विश्व का भ्रमण करते हुए समस्त वर्गों एवं सम्प्रदायों के लोगों को अपने गले लगाया एवं प्रेम-बंधुत्व का संदेश श्री गुरु ग्रंथ साहिब द्वारा प्रसारित कर तथाकथित निम्न जाति वालों के साथ खुद को खड़ा किया :

नीचा अंदरि नीच जाति नीची हू अति नीचु ॥

(शेष पृष्ठ ३५ पर)

**५७-बी, न्यू कालोनी, गुमानपुरा, कोटा (राज.)-३२४००७*

घट ही भीतरि बसै निरंजनु

-डॉ. गुरबचन सिंघ*

प्रभु हमारे अंदर ही विराजमान है परन्तु हम उसे बाहर ढूंढते हैं। मानव का यह सामान्य स्वभाव है कि वो अपने भीतर झांकने की कभी कोशिश ही नहीं करता। उसकी दृष्टि हमेशा बाहर की तरफ ही देखती है। सांसारिक वस्तुओं की भी उसे जब आवश्यकता पड़ती है तो वो कभी अपने घर में ढूंढने की कोशिश नहीं करता, बाहर से ले आता है। वो यह नहीं सोचता कि शायद वह वस्तु मेरे घर में ही मौजूद हो। फिर परमात्मा के बारे में तो वो ऐसा सोच ही कैसे सकता है कि परमात्मा उसके स्वयं के अंदर विद्यमान है? प्रभु के दर्शन के लिए, मुक्ति पाने के लिए वह चारों ओर भागता है परन्तु स्वयं के अन्दर नहीं झांकता :

कीए उपाव मुकति के कारनि दह दिसि कउ उठि धाइआ ॥
घट ही भीतरि बसै निरंजनु ता को मरमु न पाइआ ॥ (पन्ना ७०३)

अर्थात् मुक्ति पाने के लिए अनेक उपाय किए जिसके लिए दसों दिशाओं में दौड़ता रहा, लेकिन इतना-सा भेद नहीं समझ सका कि निरंजन (प्रभु) तो स्वयं के हृदय में ही बैठा है। बुद्धि में इतनी-सी बात नहीं आई कि जिसे तू सारे संसार में खोजता फिर रहा है वो तो तेरे अंदर बैठा है। बाबा फरीद जी ने भी कहा है:

फरीदा जंगलु जंगलु किआ भवहि वणि कंडा मोड़ेहि ॥
वसी रबु हिआलीऐ जंगलु किआ ढूढेहि ॥ (पन्ना १३७८)

अर्थात् तू जंगलों में कहां भटकता फिर रहा है? कहां तू झाड़ियों और कांटों में घूम रहा है? वो परमात्मा तो तेरे हृदय में बैठा है। अगर तू ऐसा कर रहा है तो तू भ्रम में भूला हुआ है। सतिगुर नानक देव जी ने सिरीराग में उच्चारण किया है :

भरमे भाहि न विझवै जे भवै दिसंतर देसु ॥
अंतरि मैलु न उतरै ध्रिगु जीवणु ध्रिगु वेसु ॥
होरु कितै भगति न होवई बिनु सतिगुर के उपदेस ॥ (पन्ना २२)

अर्थात् देश-देशान्तर में योगी, साधु, सन्यासी या वैरागी बन कर फिरते रहने से मन को शांति नहीं मिल सकती, मन की आग नहीं बुझ सकती, मन में जो तृष्णा की अग्नि है वो शांत नहीं हो सकती, अंदर की जो मैल है, मन में जो बुरे विचार हैं वो साफ नहीं होते, मन निर्मल नहीं होता, मूल रूप से जो मन का अहंकार है वो कम नहीं होता। ऐसे योगी, सन्यासी, साधु या वैरागी के वेष धारण करने पर धिक्कार है और ऐसा वेष धारण करके जीने पर भी धिक्कार है! परमात्मा तो मन-मंदिर में बैठा है और उस तक पहुंचने का मार्ग तो सतिगुर के उपदेश से ही मिलेगा।

मन रे गुरमुखि अगनि निवारि ॥
गुर का कहिआ मनि वसै हउमै त्रिसना मारि ॥ (पन्ना २२)

अर्थात् मेरे मन! तू अपने अंदर की आग को दूर कर। अगर गुरु का उपदेश मन में बस

*३-ए, सादुल कॉलोनी, तुलसी सर्किल, बीकानेर-३३४००१ (राजस्थान)

जाएगा तो अहंकार और तृष्णा स्वत: ही मर जाएंगे। तेरा मन बड़ी अमोलक वस्तु है, इसकी अहमियत को समझ।

मनु माणकु निरमोलु है राम नामि पति पाइ ॥
मिलि सतसंगति हरि पाईऐ गुरमुखि हरि लिव लाइ ॥
आपु गइआ सुखु पाइआ मिलि सललै सलल समाइ ॥ *(पन्ना २२)*

अर्थात् मन रूपी माणक एक अमूल्य वस्तु है। अगर इसमें प्रभु का नाम बस जाता है तो अहंकार और तृष्णा दूर हो जाती है। सतसंगति से अर्थात् सत्य की संगति से हमें हरि-नाम की प्राप्ति होती है और हमारा ध्यान प्रभु में लगता है। जब हमारी सुरति उस परमात्मा से लग जाती है तो हमें अनन्त सुखों की प्राप्ति होती है, क्योंकि मन में बैठे प्रभु से हम इस प्रकार एकाकार हो जाते हैं जैसे जल में जल समा जाता है। गुरबाणी में प्रभु के लिए कहा है :

तूं घट घट अंतरि सरब निरंतरि जी हरि एको पुरखु समाणा ॥
इकि दाते इकि भेखारी जी सभि तेरे चोज विडाणा ॥ *(पन्ना ३४८)*

हे परम पिता परमेश्वर! तू तो हरेक दिल में हर समय एक ही प्रकार से निरंतर समाया हुआ है। कोई दाता बना हुआ है और कोई भिखारी, ये तो सब तेरे खेल हैं।

तूं आपे दाता आपे भुगता जी हउ तुधु बिनु अवरु न जाणा ॥ *(पन्ना ३४८)*

तू आप ही देने वाला है और आप ही भोगने वाला है। तेरे सिवाय मैं तो किसी और को नहीं जानता। हम आते कहां से हैं और जाते कहां हैं?। जीवन का रहस्य यही है कि जहां से हम आते हैं वहीं वापिस लौट जाते हैं। हम परमात्मा से ही आते हैं और वापिस परमात्मा में ही लौट जाते हैं। इस ब्रह्मांड के कण-कण में वो विद्यमान है। हमारी विडंबना यह है कि जो हमारे निकट है वो हमें दिखाई नहीं देता और जो अत्यन्त निकट है उसका तो पता भी नहीं चलता। सतिगुरु रामदास जी ने राग सोरठि में कहा है :

आपे अंडज जेरज सेतज उतभुज आपे खंड आपे सभ लोइ ॥
आपे सूतु आपे बहु मणीआ करि सकती जगतु परोइ ॥
आपे ही सूतधारु है पिआरा सूतु खिंचे ढहि ढेरी होइ ॥
मेरे मन मै हरि बिनु अवरु न कोइ ॥
(पन्ना ६०४-०५)

अर्थात् अंडज, जेरज, उतभुज, सेतज जो चार तरह से प्राणियों की उत्पत्ति हुई है अर्थात् अन्डे से पैदा होने वाले जीव, जैसे--कबूतर, चिड़िया, मोर, सर्प इत्यादि अन्डज कहलाते हैं। जेर से पैदा होने वाले जीव, जैसे--पशु, मनुष्य। उतभुज अर्थात् बेल, लता, वृक्ष आदि। सेतज यानि मक्खी, मच्छर, कीटाणु आदि। इन सब में प्रभु आप ही है। पृथ्वी के सभ खंडों में वो ही है। जिस प्रकार मोतियों की माला में एक धागा और उसमें पिरोए हुए मोती होते हैं, उसी प्रकार यह सारा संसार प्रभु आप ही है। स्वयं एक सूत के समान और उसमें पिरोए मोतियों के समान। सूत भी वो ही, मोती भी वो ही, स्वयं ही वो सूत्रधार है। अपनी खुशी से जब वो प्यारा अपनी शक्ति से सूत खींचता है तो सारी रचना ढह जाती है, ढेर हो जाती है। मेरे मन में हरि के बिना दूसरा कोई नहीं है अर्थात् हर जीव में परमात्मा है। जीव परमात्मा से ही आता है और परमात्मा में ही समा जाता है। श्री गुरु तेग बहादर जी ने राग धनासरी में

कहा है :

काहे रे बन खोजन जाई ॥
सरब निवासी सदा अलेपा तोही संगि समाई ॥१॥रहाउ॥
पुहप मधि जिउ बासु बसतु है मुकर माहि जैसे छाई ॥
तैसे ही हरि बसे निरंतरि घट ही खोजहु भाई ॥
(पन्ना ६८४)

अर्थात् तू प्रभु को खोजने वन में क्यों जा रहा है? वो तो सब जगह मौजूद है, हर पल मौजूद है, पर दिखाई नहीं देता। वो तो सदा तेरे अंग-संग है। तुझमें ही समाया है। उदाहरण के तौर पर जैसे फूल में सुगन्ध बसती है पर दिखाई नहीं देती, दर्पण में हमारा प्रतिबिम्ब है पर सामने गए बिना दिखता नहीं, अपनी उस छाया को हम पकड़ नहीं सकते, हाथ लगा कर महसूस नहीं कर सकते। इसी प्रकार प्रभु हम में ही समाया हुआ है, इसलिए अपने अंदर झांकें अपने अंदर ही उसकी खोज करें। वो बाहर कहीं नहीं मिलने वाला। सतिगुर की कृपा के बिना उस परमात्मा की प्राप्ति नहीं हो सकती। गुरबाणी कहती है कि गुरु और परमात्मा में कोई भेद नहीं है। दोनों एक ही हैं:

पारब्रहम गुर नाही भेद ॥ (पन्ना ११४२)

परमात्मा और गुरु में कोई अंतर नहीं है। सतिगुरु परमात्मा का ही स्वरूप है। सतिगुरु द्वारा प्राप्त ज्ञान से जीव परमात्मा में ही समा जाता है:

सतिगुर की जिस नो मति आवै सो सतिगुर माहि समाना ॥ (पन्ना ७९७)

श्री गुरु नानक देव जी ने **'शबद'** को ही **'गुरु'** माना है। गुरु द्वारा ज्ञान प्राप्त होता है। शबद द्वारा भी ज्ञान प्राप्त होता है। उस प्राणी को प्रभु की आशीष प्राप्त होती है जिसके हृदय में शबद बसता है :

नानक ता कउ मिलै वडाई जिसु घट भीतरि सबदु रवै ॥ (पन्ना ९५२)

अर्थात् जिस हृदय में शबद का निवास है, प्रभु का निवास है, उसे ही बढ़ाई मिलती है। जो गुरु के, अपने प्रभु के वचन सुनता और ग्रहण करता है वो कांच से सोना बन जाता है।

कचहु कंचनु भइअउ सबदु गुर स्रवणहि सुणिओ ॥ (पन्ना १३९९)

भावार्थ वह जीव पवित्र हृदय वाला बन जाता है। उस पवित्र हृदय में परमात्मा निवास करता है और जिसके हृदय में प्रभु हर समय विराजमान है, संसार के सारे सुख तो उसके पीछे-पीछे दौड़ते हैं।

नव निधी अठारह सिधी पिछै लगीआ फिरहि जो हरि हिरदै सदा वसाइ ॥ (पन्ना ६४९)

नौ निद्धियां और अठारह सिद्धियां तो उस मनुष्य के पीछे-पीछे फिरती हैं जिसके हृदय में प्रभु बसा है अर्थात् जो अपने घट में हर समय प्रभु को देखता है।

बाहर मनुष्य परमात्मा को तभी देख सकता है जब उसने अपने अंतर में परमात्मा को देखा हो। जिसे उसने देखा ही नहीं उसका वर्णन वो कैसे कर सकता है?

अदिसटु दिसै ता कहिआ जाइ ॥
बिनु देखे कहणा बिरथा जाइ ॥
गुरमुखि दीसै सहजि सुभाइ ॥
सेवा सुरति एक लिव लाइ ॥ (पन्ना २२२)

जो अदृश्य है, जो दिखाई नहीं दे रहा है, उसका वर्णन कैसे किया जा सकता है? यदि वो अदृश्य प्रभु हमें दिखाई दे जाए तो ही हम उसके बारे में कुछ कह सकते हैं, उसका ठीक-ठीक वर्णन कर सकते हैं। बिना देखे तो उसका वर्णन करना असंभव है। गुरु की कृपा से, गुरु के दिखाए मार्ग से गुरमुख व्यक्ति को प्रभु

सहजता से दिखाई दे जाता है। उसके लिए शिष्य को सेवा, सुरति और ध्यान अपने अन्तर्मन की तरफ करने पड़ते हैं अर्थात् पूरे ध्यान से अपने अंदर प्रभु को खोजना पड़ता है और फिर वह प्रभु की प्राप्ति का सही मार्ग समझ जाता है।

गुरमुखि बूझै एक लिव लाए ॥
निज घरि वासै साचि समाए ॥
जंमणु मरणा ठाकि रहाए ॥
पूरे गुर ते इह मति पाए ॥ (पन्ना २२२)

गुरु के बताए मार्ग से शिष्य परमात्मा के बारे में समझ लेता है और उससे लिव लगा लेता है अर्थात् उससे प्रीत करता है तथा उसी में लीन हो जाता है। फिर वह अपने घर अर्थात् आत्म-स्वरूप में रहने लगता है और सच्चे परमात्मा में समा जाता है। ऐसा व्यक्ति जन्म-मरण से मुक्त हो जाता है। यह समझ केवल पूर्ण गुरु से ही प्राप्त हो सकती है। परमात्मा तो सदैव हमारे संग है।

हरि संतहु देखहु नदरि करि निकटि वसै भरपूरि ॥
गुरमति जिनी पछाणिआ से देखहि सदा हदूरि ॥
जिन गुण तिन सद मनि वसै अउगुणवंतिआ दूरि ॥
मनमुख गुण तै बाहरे बिनु नावै मरदे झूरि ॥
(पन्ना २७)

हे हरि के संत-जनो! हे प्रभु के प्यारो! ध्यान से देखो परमात्मा तो सर्वव्यापी है, सबके नजदीक बसता है, किसी से दूर नहीं है। जिसने गुरु से ज्ञान प्राप्त कर उसे पहचान लिया उसे तो वो हमेशा अपने हृदय में दिखाई देता है। उससे मिलने के लिए, उसे देखने के लिए हमें कहीं जाना नहीं पड़ता। जिस मनुष्य ने गुण ग्रहण कर लिए परमात्मा उसके मन में सदैव निवास करता है और जिस मनुष्य ने अवगुण धारण कर लिये परमात्मा उससे दूर रहता है। मनमुख अर्थात् जो अपने मन की बात मानते हैं, अपने मन के पीछे दौड़ते हैं वो गुणों से खाली रह जाते हैं और वो प्रभु के नाम बिना दुखी होकर जीवन बिताते हैं। प्रभु का नाम स्मरण करने से ही मन को शांति मिलती है। गुरबाणी कहती है :

राम नामु धिआए पवितु होइ आए तिसु रूपु न रेखिआ काई ॥ (पन्ना ४४३)

परमात्मा का नाम-सिमरन करने से, प्रभु का नाम जपने से, उस अकाल पुरख का ध्यान करने से मैं पवित्र हो गया। उस परमात्मा का न कोई रूप है, न कोई स्वरूप है और न उसका कोई आकार है।

रामो रामु रविआ घट अंतरि सभ त्रिसना भूख गवाई ॥ (पन्ना ४४३)

राम का नाम मेरे हृदय में रमा है। उसका निवास मेरे हृदय में है। उसका नाम मेरे मन-मंदिर में बस गया है। इससे मेरी सारी तृष्णा व भूख समाप्त हो गई है। ऐसे लगता है जैसे सारे संसार की निधि मुझे प्राप्त हो गई हो।

मनु तनु सीतलु सीगारु सभु होआ गुरमति रामु प्रगासा ॥ (पन्ना ४४३)

गुरु की शिक्षा से, गुरु द्वारा दिए गए ज्ञान से, गुरमति से राम (प्रभु) के नाम का प्रकाश मेरे अंदर हो गया है। राम मेरे मन में बस गया है। मेरे मन और शरीर को ठंडक पहुंची है और मुझे शान्ति मिली है। यह सब मुझे अपने अंदर राम को देखने से ही प्राप्त हुआ है। मन के अंदर ही प्रभु है, मन के अंदर ही ज्योति है। मन तो स्वयं ज्योति स्वरूप है।

मन तूं जोति सरूपु है आपणा मूलु पछाणु ॥
मन हरि जी तेरै नालि है गुरमती रंगु माणु ॥
(पन्ना ४४१)

हे मेरे मन! तू बाहर प्रभु को कहां खोज

रहा है? तू कहां भटक रहा है? हे मेरी आत्मा! तू तो स्वयं प्रभु का स्वरूप है। इसके लिए तू अपनी उत्पत्ति को समझ, अपने मूल को समझ। तू तो स्वयं वो प्रकाश है जिसकी खोज में सभी भटक रहे हैं। हे मेरे मन! हे मेरी आत्मा! प्रभु तो हर समय तेरे साथ है, तेरे अंग-संग है। बस, तुझे तो उसे गुरु के उपदेश द्वारा पहचानना है। गुरु के ज्ञान से उसके प्रेम का आनंद लेना है।

मूलु पछाणहि तां सहु जाणहि मरण जीवण की सोझी होई ॥
गुर परसादी एको जाणहि तां दूजा भाउ न होई ॥ *(पन्ना ४४१)*

अर्थात् यदि तू अपने उद्‌गम को पहचान ले तो तू अपने प्रियतम अर्थात् प्रभु को भी पहचान लेगा और जब तू प्रभु को पहचान लेगा तो मरने-जीने के भेद को भी पहचान लेगा। गुरु की दया से, गुरु के प्रसाद से यदि तू परमात्मा का अनुभव कर लेता है तो बाकी सब कुछ के लिए तेरा मोह समाप्त हो जाएगा, इस सांसारिक माया-मोह से तुझे मुक्ति मिल जाएगी।

मनुष्य-जीवन का उद्‌देश्य अपने मूल रूप को पहचानना है। हमारा मूल रूप हमारी आत्मा है जिसे सूक्ष्म शरीर भी कहते हैं। बाहर से दिखने वाला हमारा शरीर स्थूल शरीर है। इसके भीतर सूक्ष्म शरीर है जिसे हम आत्मा कहते हैं। यही आत्मा परमात्मा है। यही हमारा मूल रूप है जिसे हमें जानना है। अपने मूल रूप को हम गुरु की कृपा से ही पहचान सकते हैं और जब ऐसा हो जाता है तो फिर आनंद ही आनंद है।

गुर परसादी जिनी अंतरि पाइआ सो अंतरि बाहरि सुहेला जीउ ॥ *(पन्ना १०२)*

अर्थात् गुरु की कृपा से जिसने अपने हृदय में परमात्मा को पा लिया है वो हृदय में प्रभु का सिमरन करते हुए संसार से भी प्रेम करते हैं और सदा सुखी रहते हैं। सारा आत्मिक सुख हृदय में है, बाहर भटकने में नहीं। जो मनुष्य बाहर सुख की तलाश करता है वो केवल भटकता है, उसे सुख की प्राप्ति नहीं हो सकती है, प्रभु की प्राप्ति नहीं हो सकती।

बनु बनु फिरती खोजती हारी बहु अवगाहि ॥
नानक भेटे साध जब हरि पाइआ मन माहि ॥
(पन्ना ४५५)

अर्थात् प्रभु की खोज में मैं वन-वन भटकती रही। खोज-खोज कर थक गई पर वो नहीं मिला। श्री गुरु नानक देव जी कहते हैं कि जब सच्चे गुरु से मिलाप हुआ तो उनके बताए उपदेश से प्रभु तो मुझे अपने हृदय के अंदर ही मिल गया। जब तक अंदर का प्रकाश नहीं होता बाहर की रोशनी काम नहीं आती। अपने अन्तर्मन में ही खोजना होगा और सब कुछ हमारे अंदर ही है, बाहर नहीं।

सभ किछु घर महि बाहरि नाही ॥
बाहरि टोलै सो भरमि भुलाही ॥ *(पन्ना १०२)*

अर्थात् सारा कुछ, सारा आत्मिक आनंद, हमारे हृदय में ही है, क्योंकि परमात्मा हमारे हृदय में ही बसा है। जो उसे बाहर खोज रहा वो सिर्फ भ्रम में भटक रहा है और कुछ नहीं।
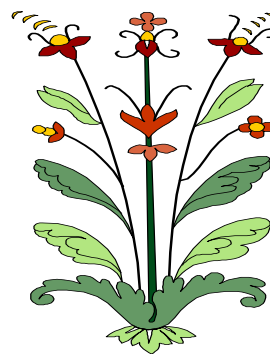
सिख धर्म में प्रकृति का स्वरूप एवं संकल्प

*-डॉ. अविनाश शर्मा**

ऐतिहासिक विकासवाद यूरोप का दार्शनिक सिद्धांत है और यह मार्क्सवाद का सिद्धांत-बिन्दु है। सारांश रूप में यह सिद्धांत इतिहास-निर्माण में मानव को केन्द्रीय सत्ता मानता है। यह सिद्धांत मानव और प्रकृति को आमने-सामने खड़ा कर देता है और मानव तथा प्रकृति के मध्य संघर्ष का सम्बंध स्थापित करता है। इसके विपरीत भारतीय धर्म एवं दर्शन मानव के विकास को प्राकृतिक नियमों के अन्तर्गत मानते हैं। ये धर्म प्रकृति एवं मानव को अभिन्न मानते हैं और प्रकृति को पूजनीय समझते हैं। सिख धर्म भारतीय धर्मों का शिखर है। इसमें मानव और प्रकृति के सम्बंधों को बहुत स्पष्ट रूप में दर्शाया गया है। 'पवण' उसका 'गुरु' है, 'धरती' 'माता' तथा 'पानी' उसका 'पिता' है। ऐसी स्थिति में क्या भौतिक समृद्धि प्राप्त करने के लिए हमें अपने माता-पिता तथा गुरुओं से संघर्ष करना चाहिए? क्या यह संघर्ष हमें विनाश के रास्ते पर नहीं ले जाएगा? भारत का सहज विकासवाद प्राकृतिक नियमों का आदर करके तथा प्रकृति के साथ सह-अस्तित्व तथा लयात्मकता के सिद्धांत पर आधारित है। इसी सिद्धांत को मानव के विकास का एक मात्र मंत्र हमारे यहां माना गया है। शताब्दियों से भारतीय आध्यात्मिकता एवं दर्शन जंगलों में वृक्षों की छाया में पल्लवित एवं पोषित होता रहा है। ऋषियों-मुनियों ने जंगल के जीव-जन्तुओं को अपना मित्र माना है और जब भी कभी उन्हें उनकी आवश्यकता पड़ी उन्होंने उनकी रक्षा की है। प्रकृति उन ऋषियों के लिए गुरु थी, मां थी। पुरातन धर्म-ग्रंथों में मानव और प्रकृति के सम्बंधों को बहुत सुखद धागों से बुना गया है। वनस्पति तथा जीव-जन्तुओं को पूजनीय स्थान दिया गया है। प्रकृति के इसी सहयोगी रूप ने मानव में आन्तरिक आध्यात्मिकता को जन्म दिया है।

श्री गुरु नानक देव जी का विचार है कि इस सृष्टि में जो कुछ हो रहा है वह सब उस ईश्वर की इच्छा से हो रहा है। ईश्वर प्रकृति के विविध रूपों के माध्यम से अपनी सत्ता का प्रदर्शन करता है। इस सत्ता से द्वैत की भावना कैसी? द्वैत की भावना अज्ञानता तथा भ्रम की देन है। यदि हम इन भ्रमों एवं अज्ञानता को दूर कर अंतिम सच्चाई को जानने का यत्न करें तो हमें पता चलेगा कि हम सब उस विशाल के प्रसार का छोटा-सा अंश हैं। यदि हम इस प्रसार के प्रत्येक कण में उस ईश्वर को नहीं महसूस करते तो हमें समझ जाना चाहिए कि हमने ईश्वर को पहचाना ही नहीं है। वास्तविकता तो यह है कि सम्पूर्ण मानवता, जीव-जन्तु तथा वनस्पति आपस में अन्तर्सम्बंधित हैं। सिख धर्म में सांसारिक भाईचारे का यही अर्थ है। इसी को श्री गुरु नानक देव जी ने 'सरबत्त का भला' कहा है।

पूंजीवादी व्यवस्था की प्रतिक्रिया के रूप में मार्क्सवाद का जन्म हुआ था। पूंजीवाद ने मनुष्य के स्थान पर मंडी को प्रमुखता प्रदान

***१२०५, अर्बन अस्टेट, फेज-१, जालंधर।**

की, जिसके फलस्वरूप मनुष्य का मंडीकरण अथवा वस्तुकरण हो गया। मानव पूंजीवादी मशीनी व्यवस्था का पुर्जा बन कर रह गया। इसी व्यवस्था ने मानव को विज्ञान और तकनीक पर विश्वास लाने को बाध्य किया। हमें इस बात का एहसास था कि विज्ञान सिर्फ प्रत्यक्ष सत्य पर आधारित है, उसकी पहुंच बहुत सीमित है, फिर भी हम पश्चिम के प्रभाव में बह निकले। विज्ञान की तुलना में प्रकृति असीमित है। नए-नए रूप धारण करने वाली प्रकृति मानव को अंतिम सत्य का दर्शन करवाती है। अंतिम सत्य ईश्वर है और प्रकृति उसी महान आत्मा की प्रतिछाया है। जब हम अपने आप को प्रकृति के हवाले कर देंगे तो हमें एहसास होगा कि हम इसी आनंदमयी सत्ता से पैदा हुए थे और इसी में हमें लीन होना है। भारतवासियों ने इस सत्य को गुरु साहिबान के आशीर्वाद से जाना व समझा।

पश्चिमी दर्शन ने हमें प्रकृति का दोहन करना सिखाया है और सिखाया है मानव की मूल प्रवृत्तियों को उत्तेजित करके आनंद की प्राप्ति करना। यह आनंद इन्द्रिय-ज्ञान तक ही सीमित होता है और बहुत कम समय तक रहता है। पूर्व में धर्म ने मानव को प्रकृति के नियमानुसार संतुलित व्यवहार करना सिखाया है। मानव ने अपने अनुभव से यह सीख लिया है कि मानव-विकास का अर्थ ही अपनी गलत मूल-प्रवृत्तियों पर अकुंश लगाना है। सिख धर्म ने मन को जीत कर संसार को जीतने की बात कही है। मन जब अपना मूल पहचान लेता है तब वह ज्योति-स्वरूप हो जाता है। यही प्राकृतिक नियम है। गुरबाणी ने इन नियमों के महत्त्व को रेखांकित करके इसी जीवन में मोक्ष-प्राप्ति के लिए राह सुझाए हैं। इसके विपरीत मनमुख व्यवस्था समाज में उच्छलता पैदा कर देगी और मानव अपने जीवन-मूल्यों को खोकर एकांकीपन एवं व्यर्थता के बोझ से दब जाएगा। गुरबाणी का संदेश हमें इस संत्रास से बचा सकता है।

श्री गुरु नानक देव जी ने इस एकांकीपन और व्यर्थता की भावना से मुक्ति के लिए मानव-सेवा और संवाद को सर्वोत्तम उपाय माना है। श्री गुरु नानक देव जी ने संवाद का संकल्प इसलिए दिया कि व्यक्ति सत्य की खोज में लगा रहे। इस में सत्य की खोज निरंतर बनी रहती है। संवाद-परम्परा में दूसरों के विचार को भी जानना आवश्यक होता है। इस प्रकार सत्य के विभिन्न रूपों का ज्ञान प्राप्त कर सम्पूर्ण सत्य के करीब पहुंचा जा सकता है। श्री गुरु नानक देव जी ने प्रकृति को भी परम सत्य के रूप में देखा है। प्रकृति सदा सृजन में लगी रहती है। प्रकृति ईश्वर का रूप है, इसीलिए श्री गुरु नानक देव जी ने उसे करता पुरख तथा करतार कहा है। श्री गुरु नानक देव जी की यह विचारधारा मानव को अज्ञानता के अंधकार से निकालने में सक्षम है। प्रकृति के विकास की भांति मानव का विकास-मार्ग सीधा नहीं है। प्रारंभ में ऐसा लगता है कि यह विकास नहीं ह्रास है, किन्तु कुछ समय के पश्चात इस विकास का अनुभव होने लगता है। विश्व ने प्रकृति से सम्बंध विच्छेद करके विनाश को आमन्त्रित किया है। अब पूर्व के प्रकृतिवाद को अपना कर विश्व अपना तथा मानव का कल्याण कर सकता है। इस दिशा में श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की विचारधारा हमारा मार्गदर्शन कर सकती है।

जीवन की गौरव-गाथा : संघर्ष एवं साहस

-डॉ. हरमहेन्द्र सिंघ*

जिन्दगी की निरंतरता संघर्ष-गाथा में छुपी होती है। एक-एक क्षण जीवन की जीवंतता का साक्षी होता है। आस्था और प्रतिबद्धता जीवन-संघर्ष के उद्देश्य को पारदर्शी बनाते हैं। चलना जीवन की वह शैली है जिसमें आगे बढ़ते चरण मंजिल की निशानदेही होते हैं। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का अमर संदेश है कि विजय निश्चय में ही होती है। दुनिया के प्रसिद्ध उपन्यासकार हैमिंगवे का मानना है कि आदमी पराजय के लिए नहीं बना। दृढ़ संकल्प के आगे असफलता हार जाती है और विजय पताका के सुनहरी रंग चारों ओर बिखर जाते हैं। प्रेरणा और साहस जिंदगी को गति प्रदान करते हैं। रात का अन्त निश्चित है सूर्य-उदय में। अंधकार कभी भी रौशनी को नहीं रोक सकता। वह तो केवल चंद पलों का मेहमान होता है। हमारी प्राचीन कथाएं मानती हैं कि अंधकार के आंचल में सूर्य की किरणें रात भर संघर्ष करती हैं और यही गौरव-गाथा सुनहरे दिन को जन्म देती है, फिर भला मानव क्यों थके, किस हार को स्वीकार करे? उसके तो दोनों हाथों में सफलता की लकीरें दिन-रात आगे बढ़ने का संकल्प दोहराती हैं। महासागर, आकाश को छूते पर्वत तथा न खत्म होने वाले मरुस्थल आदमी की हिम्मत के सामने पस्त हो जाते हैं, समुद्र पर पुल बन जाता है, पर्वत बौने बनकर आदमी की जिजीविषा को प्रणाम करते हैं और रेगिस्तान निर्झरों में परिवर्तित होकर मानव के पांव में बिछ जाते हैं। साहस का यह लंबा सिलसिला उस इतिहास को भी जन्म देता है जिसका एक-एक कदम सभ्यता, संस्कृति के निर्माण में निरंतर सक्रिय रहा। विश्व के नवनिर्माण की कहानी भी मानव की गरिमा से जुड़ी हुई है। आज का विश्व जो भूमंडलीकरण के कारण एक होने जा रहा है, उसके पीछे भी मानव की यही विजय-गाथा रही है जो कभी पत्थर-युग में पत्थरों ने सुनी, जिसका अन्तर्नाद आज भी आदमी की हिम्मत को ललकारता है। शताब्दियां गवाह हैं कि ज्ञान और कर्म व्यक्ति की वो शक्तियों रही हैं जिनके निष्कर्षों ने सृष्टि के उन युगों को जन्म दिया जिन पर मानव-संघर्ष की कहानी आज भी आगे बढ़ने का संदेश भी देती है और संकेत भी। बस शर्त सिर्फ इतनी है कि आदमी अपने कदमों की चाल को जान ले, क्योंकि :

खुल जाएगा शब्दों का रास्ता अपने आप।
जान लेगा जब आदमी अपने कदमों का नाप।

*प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, गुरु नानक देव यूनीवर्सिटी, श्री अमृतसर-१४३००५

गुरसिक्खी बारीक है--५

*-डॉ सत्येन्द्र पाल सिंघ**

एक सच्चा सिक्ख शबद-गुरु में आस्था रखता है। शबद-गुरु से जुड़े बिना मुक्ति नहीं है और आवागमन का फेर भी छूटने वाला नहीं है। एक सच्चा सिक्ख वही है जो शबद-गुरु के महत्व को जानता है और उस पर आस्था रखता है। परमात्मा के घर की राह तब तक नहीं मिलती जब तक मन गुरु से जुड़ा हुआ नहीं है :

पंडित पड़ि पड़ि वादु वखाणहि बिनु गुर भरमि भुलाए ॥
लख चउरासीह फेरु पइआ बिनु सबदै मुकति न पाए ॥
जा नाउ चेतै ता गति पाए जा सतिगुरु मेलि मिलाए ॥ *(पन्ना ६७)*

जिस पर परमात्मा की असीम कृपा होती है वही शबद-गुरु से जुड़ कर मोह-माया के बंधनों से मुक्त हो पाता है और अपना जीवन सार्थक बना पाता है। उसके जीवन को गुरबाणी अपने प्रकाश से आलोकित कर देती है और इस प्रकाश से राह दिखने लगती है :

माइआ मोहु मेरै प्रभि कीना आपे भरमि भुलाए ॥
मनमुखि करम करहि नही बूझहि बिरथा जनमु गवाए ॥
गुरबाणी इसु जग महि चानणु करमि वसै मनि आए ॥ *(पन्ना ६७)*

गुरबाणी एक सिक्ख के जीवन में अमृत की तरह है जिसे धारण करके वह अमरत्व को पा लेता है। उसके हृदय में सदैव गुरबाणी का उज्जवल प्रकाश सुशोभित होना चाहिये :

इहु हरि रसु पावै जनु कोइ ॥
अंम्रितु पीवै अमरु सो होइ ॥
उसु पुरख का नाही कदे बिनास ॥
जा कै मनि प्रगटै गुनतास ॥ *(पन्ना २८७)*

गुरबाणी से जुड़ने का पहला कदम है उस भाषा का ज्ञान होना जिसमें गुरबाणी अंकित है। प्रत्येक सिक्ख-सिक्खनी, बच्चे-बच्ची को गुरमुखी का ज्ञान प्राप्त करके श्री गुरु ग्रंथ साहिब का पाठ करना सीखना चाहिये। यदि गुरमुखी का ज्ञान नहीं है तो न तो नित्तनेम किया जा सकता है और न ही श्री गुरु ग्रंथ साहिब का पाठ किया जा सकता है। भाषा के महत्व से सभी भली-भांति परिचित हैं। भाषा ही वह सूत्र है जो एक मनुष्य को दूसरे से और समूचे समाज को एक-दूसरे से जोड़ने का कार्य करती है। भाषा विहीनता की स्थिति में न तो एक-दूसरे के विचारों को जाना जा सकता है और न ही संवेदनाओं को पूरी तरह समझा जा सकता है। भाषा हमें एक-दूसरे के निकट लाती है एकता का आधार भी बनती है। भाषा के आधार पर समाज की पहचान एक स्थायी तत्व है, जिसे नकारा नहीं जा सकता है। भूमंडलीकरण और अंतर्राष्ट्रीय मेलजोल के दौर में भी मनुष्य भाषा की समानता में ही सहजता का अनुभव करता है और चाहे जितनी भाषाओं में पारंगत हो अपनी अन्तरंग भावनाओं को अपनी मातृभाषा में ही व्यक्त करना श्रेयस्कर मानता है। मातृभाषा किसी भी मनुष्य की पहचान होती है। हमारा चेहरा, हमारा नाम, हमारा वंश भी हमारी पहचान का हिस्सा होते हैं, जिन पर प्राय: हमें गर्व होता है। गर्व उस भाषा पर भी

**ई-१७१६, राजाजीपुरम, लखनऊ-२२६०१७ मो: ९४१५९-६०५३३*

होना चाहिये जिसने जन्म-काल से ही हमारे व्यक्तित्व को विकसित और परिकृत करने में अपना योगदान दिया। वह भाषा हमारे व्यक्तित्व के विकास का भाग है, इसलिये हमारे लिये विशिष्ट है।

एक सिक्ख के लिये तो भाषा (गुरमुखी) का महत्व विश्व के किसी भी धर्म, सम्प्रदाय, क्षेत्र के व्यक्ति से अधिक है, क्योंकि उसने 'शबद' को अपना 'गुरु' माना है और उस 'गुरु' को वह 'गुरु' की भाषा के बिना कैसे भली-भांति जान पायेगा, समझ पायेगा। एक सिक्ख के लिये तो उसके गुरु की भाषा ही सर्वप्रिय है :

जनु नानकु बोलै अंम्रित बाणी ॥
गुरसिखां कै मनि पिआरी भाणी ॥
उपदेसु करे गुरु सतिगुरु पूरा गुरु सतिगुरु परउपकारीआ जीउ ॥ (पन्ना ९६)

गुरु की बाणी से उत्तम कोई बाणी हो ही नहीं सकती है एक सिक्ख के लिये। वह संसार के तमाम रत्न-ज्वाहिरात से भी अमूल्य है। उसी का उद्धार होगा जिसके मन में यह बाणी बसी होगी। इसी में परम आनंद की प्राप्ति है:

उतम सलोक साध के बचन ॥
अमुलीक लाल एहि रतन ॥
सुनत कमावत होत उधार ॥
आपि तरै लोकह निसतार ॥
सफल जीवनु सफलु ता का संगु ॥
जा कै मनि लागा हरि रंगु ॥ (पन्ना २९५)

उपरोक्त बाणी में *'सुनत कमावत'* इन दोनों शब्दों पर अपना ध्यान केन्द्रित कीजिये-- "गुरबाणी सुनना और गुरबाणी की कमाई करना।" गुरबाणी सुनने के लिये (गुरमुखी) भाषा/लिपि का ज्ञान होना आवश्यक है अन्यथा भाव ग्रहण करना सम्भव नहीं। गुरमुखी अपने आप में सम्पूर्ण और समृद्ध भाषा/लिपि है, जिसका व्यापक शब्द-कोष और तर्कसिद्ध व्याकरण है। गुरबाणी को समझने के लिये गुरमुखी को एक भाषा/लिपि की दृष्टि से समझना आवश्यक है। मात्र अक्षर-ज्ञान पर्याप्त नहीं है। गुरमुखी में कोई सिक्ख जितना पारंगत होगा श्री गुरु ग्रंथ साहिब के भाव को उतना ही गहरा उतर कर अपने मन में संजो सकेगा। गुरबाणी भाव और दर्शन की दृष्टि से ही अनमोल नहीं है उसमें साहित्यिक श्रेष्ठता भी उतनी ही है। शब्दों का संयोजन, प्रतिबिम्ब, अलंकारिकता, प्रायोगिकता, लय-बद्धता आदि देखते ही बनती है। गहन विचार सूत्र रूप में पिरोकर इस तरह सामने रख दिये जाते हैं कि हर पल विस्मय होता है और आहलाद भी। हमें समझना चाहिए गुरु की बात हमें तब समझ में आयेगी जब गुरमुखी का ज्ञान होगा। गुरबाणी को समझने के लिये सुनना ही पर्याप्त नहीं है उसे स्वयं पढ़कर समझना और अमल में लाना भी आवश्यक है, इसीलिये "सुनत" और "कमावत" की बात एक साथ की गयी है। जिसे गुरमुखी भाषा/लिपि का आवश्यक ज्ञान हो और जो पूर्णबद्धता के साथ श्री गुरु ग्रंथ साहिब का पाठ करते हुए उसके अन्तर्निहित भाव को भी धारण करे वही सच्ची बाणी से जुड़ता है :

आवहु सिख सतिगुरू के पिआरिहो गावहु सची बाणी ॥
बाणी त गावहु गुरू केरी बाणीआ सिरि बाणी ॥
(पन्ना ९२०)

सच्ची बाणी को सच्चे तरीके से पढ़ना है। यह सच्चा तरीका है विधिवत और सम्पूर्ण रूप से शबद-गुरु से जुड़ना। इस जुड़ने में कोई भ्रम न रहे, कोई भेद न रहे और कोई संशय भी न रहे। गुरु में पूरा उतरे बिना गति नहीं है :

गुरु दरीआउ सदा जलु निरमलु मिलिआ दुरमति मैलु हरै ॥
सतिगुरि पाइऐ पूरा नावणु पसू परेतहु देव करै ॥ (पन्ना १३२९)

अब यह प्रश्न स्वयं पूछना चाहिये कि क्या

हम गुरु रूपी दरिया में पूरा उतर कर अपनी जन्म-जन्मांतर की माया, मोह रूपी विकारों की जमी हुई मैल को उतार पाये हैं।

एक सिक्ख का कर्त्तव्य है कि वह बाणी इसके मूल स्वरूप में पढ़ सकने के लिए क्षमता विकसित करे क्योंकि अन्य भाषाओं में पाठ करने से अशुद्धियों की संभावनाएं भी रहती हैं और उच्चारण भी विभिन्न हो जाता है। जब तक गुरमुखी सीख रहे हो तब तक अन्य भाषा/लिपि में पढ़ना ठीक है।

नारायण (प्रभु) की सुधि लेने के लिए स्वयं को एक सच्चे सिक्ख की भूमिका में देखना होगा और गुरमुखी के माध्यम से स्वयं को उस भूमिका के लिये तैयार करना होगा। अन्य भाषाओं का महत्व अपने स्थान पर है किन्तु गुरमुखी का ज्ञान न होना और गुरमुखी की उपेक्षा एक तरह से स्वयं को सच्चे सिक्ख की भूमिका से दूर ले जाने वाली है।

विडम्बना तो यह है कि हम गुरमुखी की उपेक्षा के साथ ही साथ अपनी बोलचाल की भाषा को भी बदलते जा रहे हैं। घर में भी अंग्रेजी और हिन्दी आदि बोलचाल की भाषा बन गयी है। पंजाबी में बोल-चाल हमें हेय लगती है। अन्य समुदायों के लोग भी हमें पंजाबी छोड़कर आपस में किसी अन्य भाषा में बातें करते देखकर आश्चर्य व्यक्त करते हैं। किसी अन्य सभ्यता और संस्कृति के गुणों को अपनाना अलग बात है किन्तु जब हम अपनी विरासत को छोड़ते हैं तो सर्वत्र उपहास के पात्र बनते हैं, हमारी मर्यादा कम होती है। विशेष रूप से सिख कौम के लिये ऐसा करना दुर्भाग्यपूर्ण है, क्योंकि अन्य कौमों के धर्म हैं जबकि सिख कौम की विरासत, सिख गुरु साहिबान और श्री गुरु ग्रंथ साहिब से आरंभ होती है। यह बात सदैव याद रखनी चाहिये।

विश्व-बन्धुत्व जीवन-पद्धति श्री गुरु ग्रंथ साहिब *(पृष्ठ २४ का शेष)*

नानकु तिन कै संगि साथि वडिआ सिउ किआ रीस ॥ *(पन्ना १५)*

मायावी संसार

यह संसार असत्य तथा नाशवान है। यहां कोई भी वस्तु स्थिर नहीं है, केवल ईश्वर-नाम ही सत्य-स्वरूप है। मनुष्य अपनी सुख-सुविधा के लिए धन-दौलत एवं ऐशो-आराम का सामान जुटाने हेतु जीवनपर्यंत प्रयासरत रहता है और धनवान बनने की लालसा में स्वयं कई प्रकार के अनर्थ कर पापों का भागीदार हो जाता है, किन्तु वह भूल जाता है कि सांसारिक मोह-माया तो क्षणभंगुर एवं नाशवान है। मनुष्य किसी उद्देश्य से खाली हाथ आता है और अंत में खाली हाथ ही संसार से विदा हो जाता है।

उसके द्वारा जमा की गई धन-दौलत यहीं पर ही धरी रह जाती है। जिस परिवार को वह अपना समझता है और जिसके लिए रात-दिन एक कर देता है अंत समय तो उनमें से कोई साथ नहीं देता। गुरबाणी मिथ्या आडंबर, माया से दूर रहने एवं ईश्वर-भक्ति को समर्पित होने का उपदेश देती है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी सागर की भांति विशाल, असीम एवं अथाह है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में समूह मानवता को मुख्यतया तीन सिद्धांतों पर आधारित होकर चलने को कहा गया है :

१. नाम जपना अर्थात् ईश्वर की सच्चे हृदय से आराधना करना।

२. किरत करना अर्थात् हाथों से मेहनत कर ईमानदारी की कमाई करना।

३. वंड छकना अर्थात् अपनी कमाई को बांट कर खाना, असहाय एवं जरूरतमंद की बिना भेदभाव सहायता करना।

गुरबाणी राग परिचय-२२

राग केदारा

*-स. कुलदीप सिंघ**

तुखारी राग के बाद श्री गुरु ग्रंथ साहिब में क्रमांक २३ पर केदारा राग में बाणी अंकित है। केदारा राग का उल्लेख राग माला में मेघ राग के पुत्र के रूप में किया गया है : *"बैराधर गजधर केदारा ॥"* केदारा राग का उद्‌भव कल्याण ठाठ से होता है। इस राग के आरोह में पांच स्वर (र, ग को छोड़ कर) तथा अवरोह में सात स्वर लगते हैं, इसलिए इसे संगीत में औडव सम्पूर्ण राग कहा जाता है। इस राग का वादी स्वर शुद्ध 'म' है और संवादी स्वर 'स' है। राग केदारा में बाणी पन्ना नं. १११८ से ११२४ तक सात पन्नों में अंकित है।

राग केदारा में श्री गुरु रामदास जी के दो शबद तथा श्री गुरु अरजन देव जी के १६ शबद हैं। श्री गुरु रामदास जी के शबदों में मन को हरि-गुण-गायन के लिए संबोधित किया गया है :

मेरे मन राम नाम नित गावीऐ रे ॥ . . .
मेरे मन हरि हरि गुन कहु रे ॥ (पन्ना १११८)

श्री गुरु अरजन देव जी के शबद सरस तथा सरल हैं : मेरे मन से हरि का विस्मरण नहीं होता है। अब यह प्रीति इतनी प्रबल हो गई है कि अन्य विषय-विकार जल गये हैं। चातक पक्षी जल (स्वाति नक्षत्र) की बूंद चाहता है तथा मछली जल के बिना एक पल भी नहीं रह सकती। मेरी जिह्वा को गोपाल के गुण-गायन की टेव (स्वाभाविक आदत) पड़ गई है। हिरन का हृदय महानाद से मोहित हो जाता है और तीक्ष्ण तीर से बिंध जाता है। मैंने प्रभु के चरण-कमलों को पक्की तरह से गांठ बांध कर अपना लिया है :

बिसरत नाहि मन ते हरी ॥
अब इह प्रीति महा प्रबल भई आन बिखै जरी ॥रहाउ॥
बूंद कहा तिआगि चात्रिक मीन रहत न घरी ॥
गुन गोपाल उचारु रसना टेव एह परी ॥१॥
महा नाद कुरंक मोहिओ बेधि तीखन सरी ॥
प्रभ चरन कमल रसाल नानक गाठि बाधि धरी ॥ (पन्ना ११२०-२१)

राग केदारा में श्री गुरु अरजन देव जी द्वारा रचित एक छंत भी अंकित है। इस छंत के आरंभ की पहली तुक के बाद 'रहाउ' अंकित है: *"मिलु मेरे प्रीतम पिआरिआ ॥रहाउ॥"* छंद के द्वितीय पद में उक्त शबद के भाव को दर्शाया गया है :

हरि प्रेम भगति जन बेधिआ से आन कत जाही ॥
मीनु बिछोहा ना सहै जल बिनु मरि पाही ॥
(पन्ना ११२२)

राग केदारा में भक्त कबीर जी के ६ तथा भक्त रविदास जी का एक शबद दिया गया है। प्रथम शबद में भक्त कबीर जी हरि के भक्त (जन) के रूप में आदर्श मानव के गुणों का वर्णन करते हैं, जो विकारों से रहित है, जिसमें निंदा-स्तुति के प्रति लगाव नहीं है, जिसने मान-अभिमान त्याग दिया है :

--तेरा जनु एकु आधु कोई ॥
कामु क्रोधु लोभु मोहु बिबरजित हरि पदु चीन्है

**सी-१२७, गुरमति विचार केन्द्र, गुरु तेग बहादर नगर, इलाहाबाद-२११०१६*

सोई ॥१॥रहाउ॥
--उसतति निंदा दोऊ बिबरजित तजहु मानु अभिमाना ॥
लोहा कंचनु सम करि जानहि ते मूरति भगवाना ॥१॥ *(पन्ना ११२३)*

भक्त कबीर जी के दूसरे शबद में हरि-नाम की महिमा है। संसार की भौतिक वस्तुएं छोड़ कर भक्त कबीर जी गोबिंद के नाम का व्यापार करते हैं। गुरु नानक साहिब के सिरीराग में आए शबद *"वणजु करहु वणजारिहो"* के अनुसार भक्त कबीर जी भी *"साची वसतु"* लेकर निश्चल व्यापारी के पास पहुंचते हैं। भक्त कबीर जी के इस व्यापार में सुरति का मार्ग है, मन का बैल है, ज्ञान की गठरी है। ज्ञान की इस खेप से उनकी यात्रा सार्थक होती है:
मनु करि बैलु सुरति करि पैडा गिआन गोनि भरि डारी ॥
कहतु कबीरु सुनहु रे संतहु निबही खेप हमारी ॥ *(पन्ना ११२३)*

भक्त कबीर जी के तीसरे शबद में हठ-योग-साधना के प्रतीकों का प्रभाव है। चतुर्थ पद में संसार की अनित्यता और मिथ्या अभिमान से सावधान किया गया है :
बलूआ के घरूआ महि बसते फुलवत देह अइआने ॥
कहु कबीर जिह रामु न चेतिओ बूडे बहुतु सिआने ॥ *(पन्ना ११२४)*

भक्त कबीर जी के चौथे शबद के भाव को पांचवें शबद में पुन: स्पष्ट किया गया है। चौथे शबद के रहाउ *"चलत कत टेढे टेढे टेढे ॥ असति चरम बिसटा के मूंदे दुरगंध ही के बेढे ॥"* को पांचवें शबद के प्रथम चरण में नैतिक अधिपतन के रूप में दर्शाया गया है :
टेढी पाग टेढे चले लागे बीरे खान ॥
भाउ भगति सिउ काज न कछूऐ मेरो कामु दीवान ॥ *(पन्ना ११२४)*

प्रेम-भक्ति से नाता तोड़ कर काम वासना ही मेरी हितैषी बन गई है। टेढी पगड़ी बांध कर मैं भ्रष्ट मार्ग पर चल रहा हूं और पान का बीड़ा चबाता रहता हूं।

भक्त कबीर जी ने अंतिम पद में जन्म सार्थक करने के लिए नाम-सिमरन का उपदेश दिया है।

राग केदारा में भक्त रविदास जी का एक शबद है। आध्यात्मिक जगत में प्रेम-भक्ति का विशेष स्थान है। अचिंत्य प्रभु का चिन्तन ही हमारे चित्त की चेतनता है। कर्मकांड बाहरी दिखावा है। यदि कोई ब्राह्मण वैदिक धर्म के अनुसार छ: कर्मकांड करता है किन्तु उसके हृदय में भक्ति नहीं है तो वह चंडाल के समान है। अजामल, वेश्या तथा गजराज का उद्धार नारायण के प्रति समर्पण से हुआ। प्रभु के अनुग्रह की सीमा नहीं है। आत्म-विश्लेषण की कितनी गहराई और प्रभु-भक्ति पर कितना दृढ़ निश्चय है कि यदि इस प्रकार पाप-कर्म करने वालों का उद्धार हुआ तो (भक्त) रविदास जी का उद्धार अवश्य होगा:
अजामलु पिंगुला लुभतु कुंचरु गए हरि कै पासि ॥
ऐसे दुरमति निसतरे तू किउ न तरहि रविदास ॥ *(पन्ना ११२४)*

गुरबाणी चिंतनधारा : ३६

रहरासि साहिब - विचार व्याख्या

*-डॉ. मनजीत कौर**

आसा महला १ ॥
सुणि वडा आखै सभु कोइ ॥
केवडु वडा डीठा होइ ॥
कीमति पाइ न कहिआ जाइ ॥
कहणै वाले तेरे रहे समाइ ॥१॥ (पन्ना ९)

उपरोक्त शबद राग 'आसा' में उच्चारण किया गया पहले पातशाह श्री गुरु नानक देव जी का है। श्री गुरु नानक देव जी का पावन फरमान है, हे वाहिगुरु! हे अकाल पुरख! तेरी उपमा बेअंत है, अकथनीय है। प्रत्येक जीव दूसरों से तेरी उपमा सुन-सुन कर कह देता है कि हे प्रभु! तू बड़ा महान है। तू कितना बड़ा है, कितना महान है, यह मुकम्मल तौर पर कोई भी कहने में समर्थ नहीं हो सकता। तू कितना बड़ा है यह तो तेरा दीदार करने वाला ही बता सकता है (और तेरा दर्शन इतना सुलभ नहीं कि हर कोई कर सके)। अत: तेरी सर्वव्यापकता का बोध गुरु के ज्ञान के बिना मुमकिन नहीं। वस्तुत: तेरा दर्शन करने वाला ही जान सकता है कि तू अनंत है, तेरे जैसा और कोई भी नहीं।

कोई तेरी कीमत कोई नहीं जान सकता और न ही पूर्णतया तेरी महानता का वर्णन कर सकता है। हां, पर जो श्रद्धापूर्वक तेरा ध्यान करते हैं, हृदय से तेरी सिफ्त-सलाह करते हैं, (तेरा अंत तो वो भी नहीं पा सकते), परन्तु (तेरी ही रहमत से) 'मैं' (अहं) को मिटा कर तेरा ही गुणगान करते हुए तुझमें ही विलीन हो जाते हैं। ठीक वैसे ही जैसे अनेकों नदियां, तालाब, झरने सागर में मिलकर अथाह सागर का ही रूप हो जाते हैं, जैसे कि जपु जी साहिब की पावन बाणी में श्री गुरु नानक देव जी का पावन फरमान है :

नदीआ अतै वाह पवहि समुंदि न जाणीअहि ॥
(पन्ना ५)

वस्तुत: उस परमेश्वर की महिमा करने वाले आपाभाव भुला कर उसी में अभेद हो जाते हैं।

वडे मेरे साहिबा गहिर गंभीरा गुणी गहीरा ॥
कोइ न जाणै तेरा केता केवडु चीरा ॥१॥रहाउ॥

हे सबसे बड़े मेरे मालिक प्रभु! तू अत्यन्त गहरा तथा शांत स्वरूप, अथाह गुणों का सागर है। कोई भी तो नहीं जान सकता कि तेरी रचना (प्राकृतिक प्रसार), तेरी कुदरत का विस्तार (फैलाव) कितना है, तूने कहां तक यह रचना रची है? :

सभि सुरती मिलि सुरति कमाई ॥
सभ कीमति मिलि कीमति पाई ॥
गिआनी धिआनी गुर गुरहाई ॥
कहणु न जाई तेरी तिलु वडिआई ॥२॥

समस्त सुरतियां जोड़ कर 'एकाग्रचित्त' होकर समाधियां लगाने वालों ने समाधियां लगा कर तुझे जानने की कोशिश की। अंतर्ध्यान होकर समाधि लगाने की कठोर साधना की कमाई की है। अनेक ज्ञानी (सूझवान) पुरुषों ने अपने-अपने अंदाज से तेरी कीमत जानने का

**२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर (राजस्थान)-३०२००४ मो: ०१४१-२६५०३७०*

प्रयास किया है। ध्यान धरने वाले बड़े-बड़े ज्ञानियों ने एकाग्रचित्त होकर ने अपने-अपने ढंग से तुझे जानने की कोशिशें कीं पर वे सब तेरी तिल जितनी अर्थात् अंश मात्र भी उपमा नहीं कर सके। तेरी महिमा का तिनका मात्र भी कोई अंदाजा नहीं लगा सका, मुकम्मल तौर पर जानना तो बड़ी दूर की बात है। हे प्रभु! तुझे कोई राई मात्र भी जानने में समर्थ नहीं हो सका।

सभि सत सभि तप सभि चंगिआईआ ॥
सिधा पुरखा कीआ वडिआईआ ॥
तुधु विणु सिधी किनै न पाईआ ॥
करमि मिलै नाही ठाकि रहाईआ ॥३॥

समस्त पुण्य-कर्म, सभी जप-तप तथा दूसरों के हित में किए गए समस्त नेक कर्म अर्थात् सिध पुरुषों की करामाती ताकतें भी तेरी ही रहमतों के कारण हैं। हे प्रभु! तेरे हुक्म के बिना ये सिद्धियां, करामाती शक्तियां कोई प्राप्त नहीं कर सकता। हे वाहिगुरु! तेरी रहमतों का सदका जो कुछ भी किसी को प्राप्त होता है उसमें कोई भी किसी तरह की रुकावट या विघ्न नहीं डाल सकता।

आखण वाला किआ वेचारा ॥
सिफती भरे तेरे भंडारा ॥
जिसु तू देहि तिसै किआ चारा ॥
नानक सचु सवारणहारा ॥४॥

हे परवरदिगार! तेरे गुणों के खजाने भरे पड़े हैं। जीवों में कहां सामर्थ्य है कि तेरे गुणों का वर्णन कर सकें! जिसे तू अपनी सिफत सलाह का खजाना बख्शता है उसके मार्ग में कोई रुकावट डालने वाला नहीं हो सकता अर्थात् उसके आगे किसी का जोर नहीं चल सकता। श्री गुरु नानक देव जी फरमान करते हैं कि हे मालिक! तू आप सत्य-स्वरूप सदैव कायम रहने वाला है तथा सबको संवारने वाला भी तू ही है। जिस किसी को तू अपने नाम-सिमरन की दात बख्श कर भाग्यवान बना देता है उसकी तकदीर को संवारने वाला भी तू आप ही है।

वस्तुतः उस अनंत प्रभु का कोई अंत नहीं पा सकता और न ही अंत पाना किसी जीव का मकसद है, केवल उसकी सिफत-सलाह करते-करते उसी में विलीन हो जाना जीव का असल मकसद है। उस परमेश्वर की भक्ति के भंडार भी अनंत हैं। जिस पर उसकी रहमत होती है उसे सिमरन की दात प्राप्त होती है। गुरबाणी में अन्यत्र भी इस भाव के दर्शन होते हैं, यथा:

अंतु न सिफती कहणि न अंतु ॥
अंतु न करणै देणि न अंतु ॥ *(पन्ना ५)*

जिसे वह अपने खजाने में से सिफत-सलाह की दात बख्शता है वही इसे प्राप्त कर सकता है, अपने यत्न से जीव को कुछ भी प्राप्त नहीं हो सकता।

आसा महला १ ॥
आखा जीवा विसरै मरि जाउ ॥
आखणि अउखा साचा नाउ ॥
साचे नाम की लागै भूख ॥
उतु भूखै खाइ चलीअहि दूख ॥१॥

यह पावन शबद राग 'आसा' में श्री गुरु नानक देव जी द्वारा उच्चारण किया गया है। गुरदेव का पावन फरमान है, हे वाहिगुरु! जैसे-जैसे मैं तेरे नाम की आराधना करता हूं, तेरा नाम जपता हूं, उस समय मेरा आत्मिक जीवन बना रहता है, मगर तुझे भूलते ही अर्थात् तेरे सिमरन के बिना मेरी आत्मिक मृत्यु हो जाती है। सदैव कायम रहने वाले परमेश्वर का नाम जपना अत्यंत कठिन साधना है। जिस किसी जीव के हृदय में (उसकी रहमत सदका) ईश्वर

का नाम जपने की लगन पैदा हो जाती है। उस लगन की बदौलत, उन सिमरन की बरकतों से उसके सारे दुख-दर्द दूर हो जाते हैं।

आओ! इस तथ्य को समझने का यत्न करें। शारीरिक स्वास्थ्य हेतु जैसे समय पर पौष्टिक भोजन की आवश्यकता होती है और कुछ समय भोजन न मिले तो शरीर कमजोर होने लगता है और बहुत समय तक भोजन न मिले तो शारीरिक मृत्यु भी सम्भव है, ठीक उसी तरह आत्मिक खुराक है 'वाहिगुरु का सिमरन'। अगर यह खुराक सही समय पर न मिले तो आत्मिक कमजोरी आनी शुरू हो जाती है और लंबे समय तक यह खुराक न मिले तो आत्मिक मृत्यु हो जाती है। वस्तुतः जिन्हें नाम का ही आधार है वह इसके बिना जीने की कल्पना ही नहीं कर सकते, जैसा कि श्री गुरु नानक देव जी कलयुगी जीवों के समक्ष कितना सुंदर उदाहरण प्रस्तुत कर रहे हैं जब माता तृप्ता जी उन्हें साधारण बच्चों की तरह हंसते-खेलते न देख कर किसी गहरे चिंतन में देखती हैं तो प्रश्न करती हैं, हे नानक! तू हर समय किस ख्याल में खोया रहता है। तुझे भूख नहीं लगती। तू बच्चों के साथ खेलने में भी रुचि क्यों नहीं लेता? श्री गुरु नानक देव जी का विलक्षण जवाब है कि हे मां! *"आखा जीवा विसरै मरि जाउ ॥"* अर्थात् मैं कहता हूं कि जब ईश्वर का सिमरन करता हूं तो मेरा आत्मिक जीवन बना रहता है। अगर मैं हरि का नाम उच्चारण नहीं करता तो मेरी आत्मिक मृत्यु हो जाती है।

हे वाहिगुरु! हम पावन बाणी पढ़ने वालों के हृदय में भी ऐसी सच्चे नाम की भूख, तड़प पैदा कर दो कि उसके बिना हम जीने की कल्पना ही न कर सकें।

सो किउ विसरै मेरी माइ ॥
साचा साहिबु साचै नाइ ॥१॥रहाउ॥

आत्मा रूपी युवती का प्रतिनिधित्व करते हुए गुरदेव का पावन फरमान है कि हे मेरी मां! वह परमेश्वर मुझे क्यों भूल जाये? अर्थात् हे मां! मेरे लिए उस अकाल पुरख के चरणों में अरदास कर कि वह मुझे कभी भूले ही न। जैसे-जैसे मैं उस प्रभु का नाम-सिमरन करूं वैसे-वैसे वह ईश्वर मेरे मन में आ बसता है। जिस मन में वह हरि बसता है वहां सदा आनंद बना रहता है, आत्मिक जीवन एवं खुशियां बनी रहती हैं।

साचे नाम की तिलु वडिआई ॥
आखि थके कीमति नही पाई ॥
जे सभि मिलि कै आखण पाहि ॥
वडा न होवै घाटि न जाइ ॥२॥

सदा स्थिर रहने वाले उस परमेश्वर की तिल मात्र अर्थात् जरा-सी भी महिमा का वर्णन नहीं किया जा सकता। आज तक कोई भी उसके गुणों को पूर्णतया बयान नहीं कर सका। कितने ही जीव उसकी महिमा बयान करते-करते थक गए लेकिन उसकी हस्ती को आज तक न कोई मुकम्मल तौर पर वर्णन कर सका है और न ही आने वाले समय में कर सकेगा। वस्तुतः उस अनंत प्रभु की महिमा अकथनीय है। अतः कोई भी उसकी कीमत जानने में सक्षम नहीं हो सकता। कोई एक-एक करके तो क्या, अगर जगत के समस्त जीव एकत्र होकर (एक साथ मिल कर) भी उस प्रभु के गुणों का वर्णन करने का प्रयास करें तो भी वह ईश्वर अपने आप में और बड़ा होता चला जायेगा और यदि कोई भी उसकी महिमा न करे तो उसकी महानता में कोई कमी नहीं आयेगी।

वह प्रभु सर्वश्रेष्ठ हस्ती है। वह सदैव एकरस सर्वत्र व्यापक है। उसके गुणों को

पूर्णतया कोई बखान नहीं कर सकता। विचारणीय तथ्य यह है कि उस परमेश्वर को अपना नाम जपाने का कोई लालच नहीं, परंतु हां, उसका नाम जपने वाले को, उसकी महिमा का गुणगान करने वाले को बहुत कुछ प्राप्त हो जाता है, उसे लोक-परलोक के सुख नसीब हो जाते हैं और जो दुर्भाग्यवश उसे नहीं सिमरते, उस प्रभु का जाप नहीं करते, उनका जीवन नरक बन जाता है।

ना ओहु मरै न होवै सोगु ॥
देदा रहै न चूकै भोगु ॥
गुणु एहो होरु नाही कोइ ॥
ना को होआ ना को होइ ॥३॥

वह परमेश्वर न तो कभी मरता है और न ही उसे किसी तरह का शोक (अफसोस) होता है।

वह प्रभु समस्त जीवों को सभी दातें बख्शने वाला है। उसके भंडार सदैव परिपूर्ण हैं अर्थात् उनमें किसी प्रकार की कोई कमी नहीं आती। उस ईश्वर की सबसे बड़ी विशेषता यही है कि उस जैसा न कोई हुआ है, न कोई होगा। अतः वह अनुपम है, विलक्षण हस्ती है।

जेवडु आपि तेवड तेरी दाति ॥
जिनि दिनु करि कै कीती राति ॥
खसमु विसारहि ते कमजाति ॥
नानक नावै बाझु सनाति ॥४॥

हे वाहिगुरु! जितना बड़ा तू है उतनी ही बड़ी तेरी रहमतें हैं। तू ऐसा समर्थ प्रभु है जिसने दिन बना कर फिर रात भी बना दी है ताकि सारे दिन की दौड़-धूप के पश्चात जीव रात्रि में विश्राम कर सके।

जो जीव ऐसे समर्थ प्रभु को मन से भुला देते हैं वे कमीने हैं। गुरदेव की बाणी का फैसला है कि प्रभु के नाम के बिना अर्थात् नाम न जपने वाले महानीच हैं।

गुरबाणी आशयानुसार जन्म से कोई ऊंची या नीची जाति का नहीं माना जा सकता। वास्तव में जो प्रभु का नाम नहीं जपते वही शूद्र हैं, उनकी जात ओछी है। भक्त कबीर जी ने ईश्वर का नाम न जपने वाले साकत को सूअर से भी गया-बीता बताया है, *"साकत ते सूकर भला"* अर्थात् नाम न जपने वाले से तो सूअर श्रेष्ठ है, क्योंकि इतना अधम समझा जाने वाला प्राणी स्वयं गंदगी खाकर कम से कम गांव को तो स्वच्छ रखता है। वास्तव में नाम न जपने वाले ही कमजाति अर्थात् नीची जाति के अछूत एवं शूद्र हैं न कि जन्म के कारण कोई शूद्र है।

वस्तुतः सिमरन की बरकतों से ही जीव का जीवन श्रेष्ठतम बनता है। सिमरन का सदका ही बड़े-बड़े पापियों का भी उद्धार हो गया है, जैसा कि पंचम पातशाह की पावन बाणी सुखमनी साहिब में इस सन्दर्भ में कितना सुंदर उदाहरण दिया गया है :

मन हरि के नाम की महिमा ऊच ॥
नानक नामि उधरे पतित बहु मूच ॥

(पन्ना २६५)

नाम के बिना जीव कृतघ्न (सनाति) है अर्थात् नीच हैं, जो किसी के किए उपकार को नहीं जानते।
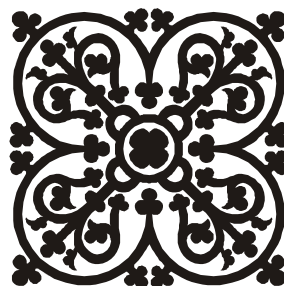
कविताएं

महादानी दातार

हे कवि!
हे कवियों के संरक्षक!
हे योद्धा!
हे दार्शनिक!
हे गुरु गोबिंद सिंघ!
हे महादानी दाता दातार!
हो गया था तुझमें,
विविध भूमिकाओं का, अद्‌भुत समाहार।
था पाया मानवता ने,
लुटा हुआ विश्वास।
बदल दिया तूने,
धर्म, समाज, राजनीति का इतिहास।
हुआ उन्नत कर्म का स्तर,
जागा मानवीय विचार।
राष्ट्रीय चरित्र का उत्थान वह,
था तेरे दिव्य-स्पर्श का, अनूठा चमत्कार।
आओ पुन: धरती पर,
फिर एक बार।
देखो सभ्यता के चेहरे पर,
दुख की रह-रह, कैसे उठती लहरें हैं!
मानवता के अंग-अंग के घाव,
कितने खुले कितने गहरे हैं।
आज द्रोह से रहता है नीचा,
कद नैतिकता का।
आज स्वार्थ से छोटा है,
व्यक्तित्व राष्ट्रीयता का।
आज बना है धर्म,
ढाल अन्याय-अत्याचार की।
नहीं समझ पाता सामान्य-जन,
जीवन-दर्शन, युक्ति, अपने उपचार की।
धुंधला रहे हैं दर्पण संस्कृति के।
हैं पड़े झूठे स्वर सभी,
आचरण की झंकृति के।

-कमलेश आहूजा, ई ए ६४, काजी मोहल्ला, जालंधर शहर।

निकटता में दूरी

तलाश रहे हैं हम उसे,
जो मौजूद है सृष्टि के हर कण में।
बिलकुल उस मृग की तरह,
जो कस्तूरी पाने को है तत्पर।
चारों ओर बरस रही है रोशनी,
हम हैं कि बंद किए बैठे हैं आंखें।
बज रहा संगीत मगर हम बने बैठे हैं बहरे।
और कुछ भी नहीं परमात्मा से अधिक निकट,
और सत्यतर उससे ज्यादा कुछ भी नहीं,
हवाओं में वही है, सरिताओं में वही है,
वही है सागर की लहरों में।
और फिर भी इतना दूर?
वही है हमारी धड़कनों में,
वही है हमारी श्वासों में।
फिर भी हम उसे क्यों महसूस नहीं कर पाते?
जाने अन्जाने चूक है हमसे हुई जा रही,
सूरज तो निकला है,
पर सूरज की तरफ पीठ किए बैठे हैं हम।

-बीबा जसप्रीत कौर, ८३, बसंत विहार, लुधियाना। मो: ०९३५६६३०५२२

नानक

–इकबाल

कौम ने पैग़ामि-गौतम की ज़रा परवाह नः की।
कद्र पहचानी नः अपने गौहरे-यक-दानेः की।
आह! बदकिस्मत रहे आवाज़ि-हक़ से बेख़बर।
गाफ़िल अपने फल की शीरनी से होता है शजर।
आशाकार उसने किया जो जिंदगी का राज़ था।
हिंद को लेकिन ख़्याली फ़लसफ़े पर नाज़ था।
शमए-हक से जो मुनव्वर हो यिः वुह महफिल नः थी।
बारिशे-रहमत हुई, लेकिन ज़मीं क़ाबिल न थी।

आह! शूदर के लिए हिंदोस्तां ग़म-ख़ानः है।
दर्दे-इन्सानी से इस बस्ती का दिल बेगानः है।
बरहमन सरशार है अब तक मए-पिंदार में।
शमए-गौतम जल रही है महफ़िले-अगयार में।
बुतकदः फिर बअ़द मुद्दत के मगर रौशन हुआ।
नूरि-इब्राहिम से आज़र का घर रौशन हुआ।
फिर उठी आखिर सदा तौहीद की पंजाब से।
हिंद को इक मर्दे-कामिल ने जगाया ख़्वाब से।

भाषा विभाग पंजाब द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'बांगिदरां' से धन्यवाद सहित
लिपियांतर--सुरिंदर सिंघ निमाणा
सहायक संपादक,
गुरमति ज्ञान/गुरमति प्रकाश।

असली खिलाड़ी

*–स. चंचल सिंघ**

बरसते हुये मेघ कहते हैं
झुके-झुके बादल कहते हैं
पतझड़ में पेड़ कहते हैं
संघर्ष करने वाले लोग कहते हैं
नेता, राजनीतिक, गैर-राजनीतिक लोग कहते हैं
कीड़े-मकौड़ों की तरह जीने वाले
आम लोग तक कहते हैं
कि जिंदगी हार भी है
उनकी बात सुननी पड़ जाए
तो सुन लेना बेशक
लेकिन मन में बिठा न लेना
हार से सीख लेकर
अपनी गलतियां सुधार-सुधार कर
पावन बाणी के जरिये गुरु पातशाहों की
एक-एक बात मान-मान कर
उस पर चलकर दिखाने वाला ही
असली खिलाड़ी होता है।

**२८, ग्रेट नाग रोड, नागपुर।*

गुरु-गाथा : १४

द्विज नार छुड़ाई

*-डॉ. अमृत कौर**

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का दरबार सजा था। दूर से किसी के रोने की आवाज आई। गुरु जी ने पहरे पर बैठे सैनिक को बुलाया, "पता लगाओ कौन है और क्यों रो रहा है?" उसने आकर निवेदन किया, "सच्चे पातशाह! एक दुखी ब्राह्मण रो रहा है। आज्ञा हो तो यहां ले आऊं?" गुरु जी के कहने पर ब्राह्मण उपस्थित हुआ। गुरु जी ने उस पर कृपा-दृष्टि डालते हुए कहा, "हे दुखी द्विज! क्या बात है?" ब्राह्मण ने कहा:

हे प्रभु! . . . दीन दयाल दीरघ बल भुजा ॥२५॥
सभि थल ते मैं होइ निरासी।
फिर आयो रावर के पासी ॥
अति अनिआइ मोहि संग कीना।
दुशट पठान गरब दुख दीना ॥२६॥
. . . पुरि हुशीयार निकट इक बसी ।
बसै पठान तेहां मति नसी ॥२८॥
मैं मुकलाइ बधू को डोरा।
गव नति जाति अपन घर ओरा ॥
करी बिलोकन तिन मम दारा।
छीन बरयो ले सदन सझारा ॥२९॥
(गुर प्रताप सूरज ग्रंथ, रितू ५, अंसू ३३, पन्ना ५६०९-१०)

"हे दीन दयाल! मेरी नव-विवाहित वधू को पठानों की बसी जो जिला हुशियारपुर में है, का नवाब जाबर खां छीन कर ले गया है। मैंने कहां-कहां पुकार नहीं की? काजी-कोतवालों के पास गया, पहाड़ी राजाओं के पास गया, पठान को ढेरों धन का लालच देकर पत्नी को छुड़ाने का प्रयास किया, पर सफलता नहीं मिली। मेरी पुकार किसी ने नहीं सुनी। अब आपकी शरण में आया हूं। हे दीन दयाल! कृपा करके मेरी पत्नी को छुड़ाने का प्रयास कीजिए।"

नहीं फिराद लगन कित दीन।
जिउं किउं जतन अनिक मैं कीन ॥
काजी कोटवार ढिग फिरियो।
किनहूं न्याउं न मेरो करियो ॥
लखि के गुर हिंदुनि सिरमौर।
परम दुखी आइओ इस ठौर ॥ (वही, पन्ना ५६१०)

सतिगुरु जी यह दर्दनाक कथा सुनकर गंभीर हो गए। गुरु जी उस ब्राह्मण की पत्नी को छुड़ाने का उपाय सोचने लगे। गुरु जी को सोच में पड़े देखकर दुखी ब्राह्मण ने ऊंचे स्वर में रोते हुए कहा :

श्री प्रभु! कै अबि त्रिय को पाउं।
नतु मैं द्वार अग्र जर जाउं ॥
जीवन धरम नहीं अबि मेरा।
तुम बिन जतन नही को हेरा ॥ (वही)

ब्राह्मण का यह निर्णय सुनकर गुरु जी मुस्कराए और बोले, "हे ब्राह्मण! तुम्हारा क्या नाम है?" ब्राह्मण ने उत्तर दिया, "गुरु जी मेरा नाम देवदास है। मैं सारस्वत ब्राह्मण हूं।" गुरु जी बोले, "हे देवदास! जल कर मत मरो। चिंताग्नि में मन को मत जलाओ। गुरु-घर से कोई निराश नहीं गया। बाबा नानक भली करेंगे।" ब्राह्मण ने शान्ति की सांस ली। बहते नेत्रों से आंसू पोंच चरणों पर गिर पड़ा। "हे सच्चे पातशाह! आप धन्य हैं। हे ग़रीब निवाज़!

**१५४, ट्रिब्यून कालोनी, बलटाना, जीरकपुर-१४०६०३*

आप धन्य हैं।"

आज्ञा हुई, "अजीत सिंघ को बुलाओ।" "कौन अजीत सिंघ? जमादार सूबेदार फौज का सेनापति?" "नहीं और कोई नहीं। बड़ा सपुत्र साहिबजादा अजीत सिंघ।" साहिबजादा अजीत सिंघ जी उपस्थित हुए। शरीर पर शस्त्र सजे हैं, सुंदरता और तेज की साकार प्रतिमा। पिता की स्नेहसिक्त दृष्टि पुत्र पर पड़ती है और कहते हैं, "बेटा! अकाल पुरख की आज्ञा है, इस ब्राह्मण की पत्नी जाबर खां पठान ने छीन ली है। उससे छुड़ाकर इसकी पत्नी इसको वापिस लौटानी है। अत्याचार करने वालों का मुकाबला करने का समय है। साथ में सैनिकों की टुकड़ी ले जाओ। बसी जाकर पठान के चंगुल से इस ब्राह्मण की पत्नी को छुड़ा लाओ।"

पिता-गुरु का आदेश पाकर साहिबजादा अजीत सिंघ ने गुरु-पिता के चरणों में शीश निवाया। गुरु-पिता ने आशीर्वाद दिया, गले से लगाया। आशीष लेकर साहिबजादा अजीत सिंघ जी बाहर आये। सैनिक साथ लिए। एक घोड़े पर ब्राह्मण को बैठाया और साथ लेकर चल दिए।

दो घड़ी दिन बाकी था जब शूरवीर साहिबजादा अजीत सिंघ जी का दस्ता सतलुज के पार पहुंचा। बंदूकें तैयार थीं, गोलियां भरी हुई थीं। रात के अंधेरे में रोशनी दिखाने वाले गुरु के ये सपूत बिना किसी को ख़बर हुए दिन फूटने से पहले बसी पठाना जा पहुंचे। उनका लक्ष्य था कि अचानक जाकर हमला करें ताकि युद्ध के आसार कम से कम बनें। ऐसा ही हुआ। साहिबजादा बसी पठाना जाबर खां के घर जा पहुंचे। जाबर खां की हवेली के द्वार तोड़ अंदर घुस गए। शोरगुल सुन कर पठान जागे। इतने में "आ गए, आ गए, सिक्ख आ गए" की आवाजें वातावरण में गूंजीं। सिंघ हवेली के द्वार तोड़ कर हवेली तक पहुंच चुके थे। आवाजें सुनकर कुछ पठान तो अंदर ही दुबक गए। बाहर कौन निकले? जो बाहर निकले, सिंघों को देख कर खिसक गए। किसी का साहस मुकाबला करने का न हुआ। मौत के मुंह में कौन जाए? जिस किसी ने मुकाबला किया मुंह के बल गिरा। सिंघों ने धावा बोलने से पहले पहरे पर खड़े व्यक्तियों की मुश्कें बांध दीं। अब सिंघ सीधे जाबर खां के कमरे में पहुंचे। जाबर खां को पलंग से उठ कर भागते हुए को पकड़ लिया। फिर ब्राह्मण की पत्नी को ब्राह्मण के हवाले किया। ब्राह्मण और उसकी पत्नी, दोनों को घोड़े पर बिठाया। जाबर खां को मुश्कें बांध कर कब्जे में ले लिया। फिर एकाएक शोर मचा, "वो गये, वो गये!" युद्ध की नौबत ही नहीं आने दी और अनंदपुर साहिब जा पहुंचे। जब सतिगुरु के दरबार में पहुंचे तो साहिब़ज़ादा अजीत सिंघ ने पठान, ब्राह्मण और उसकी पत्नी को गुरु जी सम्मुख पेश किया। न्यायशील गुरु जी ने जाबर खां को उसके अन्याय और अत्याचार का दंड देने के लिए उसे तीर से मौत के घाट उतार दिया। ब्राह्मण की पत्नी को उसके भाईचारे में मिलाने के लिए उसके हाथों से संगत में प्रसाद बंटवाया। लंगर का आयोजन किया गया जिसमें ब्राह्मण के भाईचारे को शामिल किया गया। ब्राह्मण की पत्नी के द्वारा लंगर की सेवा की गई। किसी का साहस न हुआ कि गुरु जी की इस आज्ञा का उल्लंघन कर सके। उन्होंने उस स्त्री को अपने भाईचारे में स्वीकार कर उदारता का परिचय दिया। गुरु जी के इस वीर कार्य के द्वारा उनकी कीर्ति दुष्ट-दमन के रूप में चारों ओर फैल गई। अब मुगलों में वो साहस न रहा कि किसी भी हिन्दू औरत की ओर आंख उठा कर देख सकें।

दशमेश पिता के बावन दरबारी कवि-२५

दशमेश के दर के मसकीन - कवि हुसैन अली

*-डॉ राजेंद्र सिंघ साहिल**

दशमेश पिता साहिब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के विद्या दरबार में अनेक विद्वान, लेखक, कवि, साहित्यकार, अनुवादक, भाषा-शास्त्री आदि मौजूद थे। ज्ञान-विज्ञान-कला की दृष्टि से अत्यंत उच्चस्तरीय इस दरबार की अन्य एक बड़ी विशेषता थी--इसका धर्म निरपेक्ष स्वरूप। कई धर्मों, अकीदों, सम्प्रदायों के विद्वान एवं साहित्यकार गुरु साहिब के दरबार की शोभा बढ़ाते थे। यहां कला एवं विद्वता की उपासना की जाती थी। धर्म-संप्रदाय का रंच मात्र भी भेदभाव नहीं था। दशम पिता का उद्घोष *"मानस की जात सबै एकै पहिचानबो"* यहां अपने वास्तविक प्रायोगिक मूर्त रूप में दिखाई देता था।

दरबार में मुस्लिम कवियों की भी उल्लेखनीय संख्या थी। गुरु साहिब के यहां मुस्लिम विद्वानों-लेखकों-कवियों का भी उसी प्रकार सम्मान किया जाता था जैसे अन्य दरबारियों और साहित्यकारों का किया जाता था।

दशमेश पिता के बावन दरबारी कवियों में शामिल मुस्लिम कवियों में एक नाम 'हुसैन अली' का बड़ा उल्लेखनीय एवं प्रसिद्ध है। कवि हुसैन अली का नाम कई स्थानों पर 'हुसैनी' या 'अली हुसैन' करके भी आया है। परम्परा के अनुसार कहा जाता है कवि हुसैन अली ने एक कबित्त लिखा था जिसमें श्री गुरु नानक देव जी की 'रबाब' की बड़ी प्रशंसा की गई थी। दुर्भाग्य से इस कबित्त के बारे में और कोई जानकारी नहीं मिलती। कबित्त का जिक्र तो कई ग्रंथों में हुआ है, परन्तु अब यह कबित्त कहीं उपलब्ध नहीं होता। बहुत संभव है कि किसी खोजकर्ता को किन्हीं पुराने साहित्य-संग्रहों में से यह कबित्त मिल जाये।

प्रोफेसर प्यारा सिंघ पदम की एक पुस्तक- "श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी दे दरबारी रतन" में प्रोफेसर साहिब ने कवि हुसैन अली के कुछ शेयरों को दर्ज किया है। प्रोफेसर साहिब का कहना है कि उन्हें ये शेयर गुरपुरवासी जत्थेदार शरम सिंघ से प्राप्त हुए। जत्थेदार जी ने ये शेयर किसी पुरातन पोथी में पढ़े थे और प्रोफेसर प्यारा सिंघ पदम को अनंदपुर साहिब में सुनाये थे।

कवि हुसैन अली के ये शेयर उर्दू भाषा में हैं, जिनमें दशमेश पिता को खुदा का रूप बताया गया है और स्वयं को गुरु के दर का याचक कहा गया है :

तज़ल्ला तिरी जात का सू बसू है।
जिधर देखता हूं उधर तू ही तू है।
नहीं ग़र्ज़ मुझको दैरो-हरम से,
मगर तेरे दीदार की आरजू है।
दीदार-ए-खुदा गर नहीं तुमने देखा,
गोबिंद को देखो वही हू-ब-हू है।
दर मसकीन 'हुसैन' क्यों छोड़े,
तरीके गुलामी जु तौकि ग़लू है।

इस प्रकार 'कवि हुसैन अली' दशमेश पिता के प्रति असीम श्रद्धा से परिपूर्ण दिखाई देते हैं। उनका विनम्र व्यक्तित्व उनके शेयरों में स्पष्ट झलकता है।

उपर्युक्त प्रसंग से साबित होता है कि दशमेश पिता साहिब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के दरबार का माहौल कितना सुंदर, कितना भावुकतापूर्ण और कितने मेल-मिलाप वाला था!

*१/३३८, 'स्वप्नलोक', दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा (लुधियाना)-१४११०१, मो: ०९४१७२-७६२७१

प्रवीण भाई पटेल बने स. प्रवीण सिंघ

अमृतसर : ११ जुलाई। कुछ समय पहले व्यापार में हुए घाटे के चलते निराशा में जीवन को समाप्त करने की सोच रहे प्रवीण पटेल को गुरु-घर से ऐसी प्रेरणा और शक्ति मिली कि आज वे 'प्रवीण भाई पटेल' से 'स. प्रवीण सिंघ' हो गए हैं। प्रवीण ने गुरु मर्यादा के अनुसार श्री अकाल तख्त साहिब के पांच प्यारों से अमृत छका और सिक्ख मर्यादाओं व परंपराओं पर पहरा देने का संकल्प किया। खालसाई जैकारों के साथ स. प्रवीण सिंघ को स. गुरबचण सिंघ उपसचिव, स. मलकीत सिंघ पांच प्यारा तथा स. भूपिंदर सिंघ गुरुद्वारा इंस्पेक्टर ने सिरोपा देकर सम्मानित किया गया।

स. प्रवीण सिंघ ने बताया कि वे गुजरात के भावनगर के रहने वाले हैं। उनका डायमंड का कारोबार था। गत दो वर्षों में उन्हें डायमंड के काम में भारी घाटा पड़ा। वे मानसिक दबाव में रहने लगे। जीवन-लीला समाप्त करने के लिए वे गाडी में बैठ गए। लेकिन गाड़ी में बैठे हुए कुछ सिक्खों ने उनकी व्यथा को सुन कर उन्हें श्री हरिमंदर साहिब में माथा टेकने के लिए कहा। वे कभी भी श्री हरिमंदर साहिब में नहीं आए थे और न ही उन्हें सिख धर्म के बारे में ज्ञान था। उन्होंने मरने का विचार त्याग दिया और घर लौट गए। कुछ दिन बाद वे घर से श्री हरिमंदर साहिब अमृतसर के लिए निकल पड़े। श्री हरिमंदर साहिब पहुंचकर परिक्रमा में बैठ कर 'सतिनाम वाहिगुरु' का जाप करने लगे। जब देखा कि संगत पवित्र परिक्रमा की सेवा कर रही है तो वे भी उसमें शामिल हो गए। इससे उनके भीतर का बोझ हल्का होने लगा। फिर वे लंगर भवन में गए जहां उन्होंने सेवा का भाव समझा। कुछ दिन बाद वे घर लौट गए। घर लौट कर उन्होंने सिखी स्वरूप धारण करने की ठानी। केश काटना छोड़ दिया और सिर पर दसतार सजानी शुरू कर दी। कारोबार भी धीरे-धीरे जमने लगा। इससे उनका विश्वास गुरु-घर पर और भी बढ़ने लगा।

इसी निश्चय को पूरा करने के लिए वे अमृतसर पहुंचे। श्री अकाल तख्त साहिब के पांच प्यारों ने उन्हें अमृत छकाया। स. प्रवीण सिंघ ने कहा कि गुरु के दरबार से उन्होंने नई जिंदगी पाई है। सेवा का भाव सिक्ख धर्म में बहुत ऊंचा है। इसी प्रेरणा से ही उनके भीतर सिक्खी स्वरूप धारण करने का विचार आया था जिसे वे अंतिम सांस तक निभाएंगे।

ऐतिहासिक गुरुधामों के दर्शनों के लिए नि:शुल्क बस सेवा शुरू

अमृतसर : १६ जुलाई। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा श्री हरिमंदर साहिब के

दर्शनों के लिए देश-विदेश से आने वाली संगत के लिए रेलवे स्टेशन से श्री हरिमंदर साहिब तक लाने तथा ले जाने के लिए विशेष बसों की नि:शुल्क सुविधा पिछले लम्बे समय से दी जा रही है। अब जिला अमृतसर तथा तरनतारन के विभिन्न ऐतिहासिक गुरुद्वारा साहिबान के दर्शनों के लिए दो बसों की नि:शुल्क सेवा आरंभ की गई है। बस सेवा आरंभ करते समय जत्थेदार अवतार सिंघ अध्यक्ष शिरोमणि गु: प्र: कमेटी ने बताया कि ये दो बसें रोजाना श्री गुरु रामदास सराय से सुबह रवाना होंगी तथा संगत को गुरुद्वारा छेहरटा साहिब, गुरुद्वारा संन साहिब-बासरके, गुरुद्वारा बीड़ बाबा बुड्ढा जी-ठट्ठा, श्री दरबार साहिब-तरनतारन, गुरुद्वारा श्री गोइंदवाल साहिब, गुरुद्वारा पा: नौवीं बाबा बकाला आदि के दर्शन कराने के बाद शाम को श्री हरिमंदर साहिब अमृतसर पहुंचा करेंगी।

घर से निकाले माता-पिता को घर एवं गुजारा भत्ता दे बेटा

जालंधर : १ अगस्त। पंजाब में २००८ में लागू हुए 'मेंटेनेंस एंड वेलफेयर ऑफ पैरेंटस एंड सीनियर सिटीजन एक्ट २००७' का असर दिखाई देने लगा है। बुढ़ापे में बच्चों की बेरुखी के चलते दर-दर की ठोकरें खाने पर मजबूर मां-बाप की सामाजिक सुरक्षा के लिए बनाए गए पंजाब सरकार के इस कानून के तहत पहले फैसले ने जालंधरवासी एक बुजुर्ग दंपत्ति को राहत दिलाई है।

रिटायर्ड पी. सी. एस. अधिकारी स. सुखिंदर सिंघ की ७४ वर्षीय पत्नी बीबी गुरचरन कौर, निवासी सतकरतार नगर, जालंधर ने एस. डी. एम.-१ की ट्रिब्यूनल अदालत में शिकायत दर्ज कराई थी कि उनकी दो संतानें--एक बेटा तथा एक बेटी हैं। बेटी की शादी अमृतसर में हुई है। बेटा पिछले १९ वर्ष से अपनी पत्नी के साथ उनसे अलग रह रहा है। उन्होंने बताया कि उनके पति कैंसर से पीड़ित हैं और बिस्तर पर हैं। इस बीमारी पर उनका काफी खर्च हो रहा है। उनकी पेंशन का ज्यादा हिस्सा उनके इलाज पर खर्च हो जाता है। उनके बेटे ने उन्हें मार-पीट कर घर से बाहर निकाल दिया है। सब-डिवीजनल मजिस्ट्रेट-१ आर. पी. सिंघ की ट्रिब्यूनल ने सारी जांच-पड़ताल करा कर ३० जुलाई २००९ को अपने फैसले में उनके बेटे स. कंवलजीत सिंघ को आदेश दिए कि वह हर माह दस हजार रुपए देख-रेख के रूप में अपने माता-पिता को दे। जिला सामाजिक सुरक्षा अधिकारी को यह सुनिश्चित किए जाने के लिए कहा गया है। साथ ही यह भी कहा गया कि वह उनका घर में आना-जाना निर्बाध रूप से सुनिश्चित कराए। वह अपने माता-पिता को घर में रहने से नहीं रोक सकता।

पंजाब सरकार के इस एक्ट के अन्तर्गत आए प्रथम निर्णय की चारों ओर प्रशंसा की जा रही है।

प्रिंटर व पब्लिशर स. दलमेघ सिंघ ने गोल्डन आफसेट प्रेस, गुरुद्वारा रामसर साहिब, अमृतसर से छपवा कर मालिक शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के लिए कार्यालय, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, अमृतसर से प्रकाशित किया।संपादक स. सिमरजीत सिंघ। प्रकाशित करने की तिथि : ०१-०९-२००९